वर्ष 27 | श्रावण-भाद्रवा | अगस्त-2022 | अंक 8 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048870/26/30/1982
पोस्टल पंजीयन पी.आर.एन.नं.एम.पी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

...रीझो रीझो श्री वीर देखी शासनना शिरताज...
...हरखो हरखो आ मौसम आवी पर्व पर्युषण आज...

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नम:

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

पर्वाधिराज महापर्व:- *महापव पर्युषण महावीर स्वामी के मूल सिद्धांत अहिंसा परमो धर्म जिओ और जीने दो की राह पर चलना सिखाता है। पर्युषण के दो हिस्से करें तो पहला तीर्थकरों की पूजा, सेवा और स्मरण तथा व्रतों के माध्यम से शारीरिक, मानसिक व वाचित तप में स्वयं को पूरी तरह समर्पित करना होता है। इस पर्व में दान का विशेष महत्व होता है साथ ही यह भी संकल्प किया जाता है कि हमारे द्वारा किसी भी रुप से किसी भी जीव जाने अनजाने में कोई तकलीफ न पहुंचे।*

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चे तहेव सज्झाओ।
झाणं च विउस्सग्गो, ऐसो अब्भिंतरो तवो॥

प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्त्य-सेवा, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (कायोत्सर्ग)- इस तरह छह प्रकार के आभ्यन्तर-तप है। - उत्तरा. सूत्र, 30.30

पाथेय **उपासना और चरित्र:-** वर्तमान जीवन में गतिरोध हो रहा है। उसका कारण लंगड़ापन है। उपासना है, पर वासना को मिटाने का प्रयत्न नहीं। उपासना को मैं अनावश्यक नहीं मानता, परन्तु चरित्र शुद्धि के बिना वह अपूर्ण है। सही बात यह है कि उपासना भी हो और चरित्र भी। दोनों का अपना-अपना स्थान है। भोजन की जगह भोजन है और पानी की जगह पानी। प्यास बुझाने के लिये भोजन नहीं किया जाता और भूख मिटाने के लिए पानी नहीं पीया जाता। दोनों आवश्यक है। शुद्धि के लिये चरित्र आवश्यक है और उसकी स्थिरता के लिये उपासना भी आवश्यक है। जीवन का गतिरोध तभी मिटेगा जब दोनों का साथ-साथ विकास होगा।

वैज्ञानिक-विश्व की समृद्धि और दर्शन सम्पदा की विपन्नता भी आज के जीवन का लगड़ापन है। विज्ञान बाहरी उपकरणों को बढ़ा रहा है किंतु दर्शन की कमी आंतरिक सम्पदा को न्यून बना रही है। विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ दर्शन की प्रगति का संतुलन रहे, यह आवश्यक है। जीवन का गतिरोध तभी मिटेगा, जब विज्ञान के साथ दर्शन का भी विकास होगा

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 श्रावण-भादवा अगस्त 2022 अंक-8

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- जीवन के नये अध्याय की शुरुआत : पर्युषण महापर्व (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन क्षमा, भक्ति, शुद्धि व सिद्धि का महापर्व है पर्युषण- पू. वीररत्नविजयजी म.	5-6
4- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा.,विश्व बन्धुत्व का पर्व	7-8
5- क्षमा को बना लो आदत, सर्वोपरि मानव, क्षमा	9-10
6- पर्युषण : विरक्ति और वैराग्य का पर्व	11-14
7- सेवा का संतोष	15
8- समाज में उजाले कम क्यों हो रहे है ?	16
9- वात्सल्य का अनुबंध : रक्षाबंधन, सुख	17
10-अपने माता-पिता का सम्मान करने के 35 तरीके-रमण पाटणी सफलता का सूत्र : धैर्य	18
11-श्रावक के 14 नियम जो हमें रोज लेने चाहिये...., स्थायी सुख का आधार : सत्य	19
12-जीवन दीप : नाम सार्थकता का प्रतीक है -डॉ. सुभाष जैन, पांच नमस्कार	20
13-आत्मा को शुद्ध करनेवाले महापर्व, मैत्री की पराकाष्ठा	21
14-मैं सुभग- पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.	22
15-मधुर संबंधों को व्यापार मत बनाओ	23-24
16-बलपूर्वक भी धर्म करना चाहिये-तेतलिपुत्र, क्या चोरी का माल हम खरीद सकते हैं ?	25-26
17-जिन दर्शन व अष्टप्रकारी भाव पूजा का अध्यात्मिक महत्व, कर्म के उपकार अध्यात्म मैत्री-वर्धक है....	27-28
18-कब करना चाहिए संवत्सरी संबंधी मिच्छामि दुक्कडं ?	29
19-वर्गपहेली- 327 - जयंतीलाल जैन	30
20-ज्ञान गंगोत्री- 327 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.	31
21-शासन-समाचार	32-41
22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक	42

संपादकीय

जीवन के नये अध्याय की शुरुआत : पर्युषण महापर्व

''परि आ समन्तात् उष्यते दहयन्ते पाप कर्माणि यस्मिन् तत् पर्युषणम्'' *चारों ओर से आत्मा में रहनेवाले पाप कर्मो कसे जलाऐ, तपाये वह पर्युषण है। पर्युषण एक आध्यात्मिक महापर्व है, वैचारिक प्रदुषण से मुक्ति का सटिक उपाय है यह तिथि में नहीं मनः स्थिति में पैदा होना चाहिये, अगर एक बार पैदा हो जाए तो फिर कभी जाता नहीं है यही जीवन के नये अध्याय की शुरुवात है। अष्टान्हिका का महापर्व का यह पुण्य का प्रभाव है कि इन दिनों में की गई आराधना परमात्मा की भक्ति जीवन जीने के नये रास्ते को दिखलाती है। पर्व के इस अमृत कलश में जीवन निर्माण के काम में आने वाले वह भव्य प्रबंध है जो व्यक्ति को आध्यात्म मार्ग पर आगे बढ़ाकर आत्म स्वरुप की पहचान करवा सकता है और नहीं तो एक उच्च कोटी के चरित्र सम्पन्न सद्भाव और सद्गुण वाला व्यक्तित्व प्रदान कर सकता है।*

परमात्मा श्री वीरप्रभु के समस्त सिद्धांतों सीखें, संदेशों का निचोड़ हमें महापर्व में मिल जाता है। आठ दिन की आराधना में इतना कुछ समाहित कर दिया है कि हम धर्माराधना के साथ आनंद खुशी को भी सम्मिलित कर त्याग धर्म करने का अनुभव आयोजन महापर्व है। जीव मात्र के प्रति कल्याण की भावना और जीवन में हुई समस्त प्रकार की त्रुटियों के लिये हृदय में क्षमाभाव को लाकर आत्म मंथन कर अपने को निर्मल बनाना ऐसी सुन्दर व्यवस्था महापर्व के अलावा और कहां मिलती है ? महापर्व विकारों और कषायों को जीतने का अमर संदेश है अगर इस महापर्व पर्युषण के सही अर्थ को समझे तो इसका उत्तर एक लाईन में मिल जाता है वह यह है कि- जैन धर्म बदला लेनेवाला नहीं बल्कि जीवन में बदलाव लानेवाला धर्म है। जीवन में परिवर्तन लाने का आधार महापर्व है अगर आठ दिनों के संदेशों को सही रुप में समझ ले तो जीवन बदलने के लिये एक ही महापर्व बहुत है।

वर्तमान में चल रहे हिंसक द्वेष और बदला लेने के भावों से मानवता बहुत ही आहत हुई है। धर्म के वास्तविक अर्थ को सही रुप से धर्म के ठेकेदारों ने नहीं समझाया है यही कारण है कि दुर्भाव से धर्म को बहुत हानि हो रही है।

यही सभी धर्मों का भी यही कहना है। इस्लाम धर्मवाले मोहम्मद को मानते है, मोहम्मद का अर्थ ही कि मोह और मद से जो मुक्त है वह मोहम्मद। यही अर्थ जिनेन्द्र का भी है, हिन्दू सनातन धर्म की बात करें तो वह मोहन-मदन की पूजा की जाती है इसका भी अर्थ यही है कि मोह और मद से अपने को दूर करें। रहीम का भी बहुत सीधा और सरल अर्थ है कि जो रहम करें वह रहीम। ईसाई का भी सच्चा अर्थ यही है कि जो ईश्वर के समीप है ईश्वर का है, वह ईसाई। इसी तरह से बुद्ध वह है जो परमबोधि को प्राप्त हो गया है। वैष्णव वह है जो बैर का विनाश करें। इसी तरह से पारसी वह है जो संसार से पार देखें जो संसार से पार हो गया है। सिक्ख वह है जो शिष्य बनने को तैयार हो जाये। शब्दों की सार्थकता समझकर हम हमारे में समभाव को पैदा कर लें, जाग्रत कर लें। यही बड़ी उपलब्धि इस मानव भव की ओर महापर्व के प्रति अपने को आत्मसात करने की रहेगी। शब्दों में छिपे हुए सत्य को हम आचरण का स्वरूप प्रदान कर देंगे तो जीवन की सार्थकता भी सिद्ध हो जायेगी। महापर्व भी तो यही कहता है कि आप अपने आप को बदल लें।

जिंदगी को लायक बनाने में पूरी उम्र भी कम पड़ सकती है किंतु जिंदगी को नालायक बनाने में एक मिनिट भी नहीं लगता है। जीवन साधने के लिये बहुत मेहनत करना पड़ती, कुछ भी प्लेट में आसानी से प्राप्त नहीं होता है। हमारे रहन, सहन, व्यवहार बोलचाल के तौर तरीकों पर बहुत ही सतर्क रहने की आवश्यकता है इस बात को हमें समझना होगा। आप कितने ही अच्छे क्यों न हो जाए फिर भी जीवन में परीक्षा तो देनी होती है, सोने को भी अपनी शुद्धता के लिये कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है जब कहीं हमारा परीक्षण हो तो हमें भी अपनी शुद्धता को सिद्ध करना पड़ेगा नहीं तो तिरस्कार का सामना करना होगा। पर्व भी यही बताने प्रतिवर्ष आते है इसी कारण पर्व की प्रासंगिकता है, पर्व जीवंता का प्रतीक है और अपनी गलतियां सुधारने के लिये संदेश वाहक है।

धर्माराधना के साथ चरित्र चाल और आचरण

बदलने के लिये पर्व के आंतरिक पक्ष का हम चिंतन कर अपने जीवन के कई दुर्बल पक्षों को सुधार सकते है, सही समझो तो यही पर्युषण पर्व है।

आगमोद्धारक परिवार ने हमेशा ही पाठकों की समस्या वह बात करने का प्रयास किया है और उसे दूर करने की तत्परता भी दिखाई है इसके बाद भी कई परिस्थितियां हमारे हाथ नहीं होती है इसका हमें दुःख भी है, विगत वर्ष में आगमोद्धारक के संबंध में हुई सभी त्रुटि के लिये मैं व्यक्तिगत रुप से अपने को जिम्मेदार मानते हुए आप से क्षमा चाहता है। यह विश्वास भी व्यक्त करता हूं, हम जानबुझकर कोई गलती नहीं करेंगे। धन्यवाद ! – **डॉ. सुभाष जैन**

क्षमा

✻ आपकी भूलों को कोई उदारता से माफ कर दे, ऐसी ही आप इच्छा रखते हो न ? तो फिर आप दूसरों की भूलों को माफ करने में क्यों हिचकिचाते हो ?

✻ मनुष्य का आभूषण रुप है, रुप का आभूषण गुण है गुण का आभूषण ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

✻ क्रोध की आग से जीवन रेगिस्तान बनता है। क्षमा के अमृत से जीवन बसंत बनता है। आपको जीवन कैसा बनाना है।

✻ क्रोध की आग को बुझानेवाला क्षमा का शस्त्र जिसके हाथ में है, उसकी हमेशा जय होती है। क्षमाशील को पराजित करने की ताकत किसमें है ?

✻ शूरवीर की क्षमा सच्ची है। कायर की क्षमा मजबूरी है।

✻ क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो, उसको क्या ? जो दंतहीन, विषरहित, विनीत सरल हो, जहां नहीं सामर्थ्य शोध की, क्षमा वहां निष्फल है, गरल घूंट पी जाने की, मिष है वाणी का छल है।

✻ जिसने जीवन में शत्रु को क्षमा नहीं दी, उसने जीवन का श्रेष्ठ रस चखा ही नहीं।

भक्ति, शुद्धि व सिद्धि का महापर्व है पर्युषण

✻ श्री वीररत्न विजयजी म.सा.

आत्म विकास के दो पथ है- तीर्थ तथा पर्व, तीर्थ के पास हमें जाना होता है, पर्व हमारे पास आते है। पर्युषण पर्वाधिराज है, इसमें समस्त गुणों के सर्जन तथा समस्त दोषों के विसर्जन की ताकत है।

आत्मिक नवजागरण का शंखनाद करते पर्युषण के आगमन के साथ ही जैन जगत के आबाल-गोपाल के मन मस्तिष्क, दिल-दिमाग में श्रद्धा-विश्वास तथा समर्पण का दिव्य भाव उछाला मारने लगता है, जैन का बच्चा जाग जाता है। इस संदेश के साथ-उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहां जो सोवत है, जो सोवत है, वह खोवत है, जो जागत है वह पावत है।

पर्वाधिराज पर्युषण आत्म निरीक्षण तथा आत्म परीक्षण का पर्व है। आत्मिक शोध-खोज का पर्व है, शुद्धि व विशुद्धि का पर्व है। भक्ति-शक्ति व मुक्ति का त्रिवेणी संगम पर्व है। जिनभक्ति व जिन प्रेम का संदेश पर्व है। मातृ-पितृ वंदना, गुरुचरण सेवा तथा परमात्मा की आज्ञा का पालन का पर्व है। स्नान तन का ही नहीं, मन का, वचन का, आचरण के स्नान का पर्व है। आठ दिवसीय महापर्व अष्टकर्म जलाने का पर्व है। जगत में भटकते मन को जगतपति से जोड़ने का पर्व है। बाहरी दौड़ दूर करके भीतर में खेलने का यह पर्व है। क्रोध-वैर की चिंगारी को समाप्त करके क्षमा के दिव्य जल में स्नान-पान-आचमन करने का आलौकिक पर्व है पर्युषण।

महापर्व का प्रथम दिन पांच कर्त्तव्यों का संदेश देता है:-

✻ समस्त जीवों से मैत्री भाव।

✻ सहधर्मी की पूर्ण भक्ति।

✻ तीन दिवसीय निराहार उपवास।

✻ परमात्मा की परम भक्ति।

✻ क्षमापना-वैर किसी से नहीं, प्रेम सभी से।

भाव के मुताबिक पुण्यः-

गाय को जैसा खाना दो उसके अनुसार दूध मिले !
जैसी वर्षा होती है उसी के अनुसार फसल होती है !
लागत के मुताबिक लाभ होता है !
भाव के मुताबिक पुण्य होता है !

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

मायामृषावाद क्यों त्याज्य है ?

आशा है कि इतने विवेचन से आप अच्छी तरह समझ गये होंगे कि मायामृषावाद क्यों त्याज्य है ? यह कितना खतरनाक जाप है ? **''मुंह में राम, बगल में छुरी''** कुलटा नारी की तरह कहना कुछ, करना कुछ और दिखाना और ही कुछ तीसरा, की वृत्ति के जैसा मायामृषावाद का पाप एक रत्ति भर भी लाभकारक नहीं है। अंश मात्र भी फायदा करानेवाला नहीं है। न-स्व को और न पर को किसी को लाभ नहीं है। मायावी-कपटी आपके सामने तो मीठा-मीठा बोल लेगा, आपको ऐसी दंभी व्यक्ति एक बार तो बहुत ही मीठी-अच्छी-प्रिय लगेगी, लेकिन यह समझकर सावधानी से चलना कि नारियल के पानी में कपूर डालने से ठंडक जरुर लगेगी लेकिन पीने पर जहर की असर करके मृत्यु भी करा देता है। अतः दंभी कभी भी ठग सकता है। कहा है कि- दगा किसी का सगा नहीं। दंभी केवल अपना स्वार्थ ही देखता है। अतः दंभी मतलबी अंधा कहलाता है। स्वार्थी अंध कहलाता है। प्रशमरतिकार उमास्वातीजी-तो स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि-

मायाशील: पुरुषो यद्यपि न करोति किंचदपराधम।
सर्प इवाविश्वास्यो भवति तथाप्यात्मदोषहत: ।।

मानलो कि मायावी पुरुष कोई अपराध अभी नहीं भी कर रहा है फिर भी वह विश्वसनीय तो नहीं है। जैसे सांप अभी नहीं काट रहा है और बिल में मुंह डाले हुए पड़ा है फिर भी सांप का विश्वास नहीं करना चाहिये। क्योंकि वह कब काटेगा यह भरोसा नहीं है। उसी तरह मायावी कब फसाएगा ? कब बाजी बिगाड़े गा इसका भरोसा नहीं है। जबकि सिर्फ मायावी पर भी विश्वास नहीं करना चाहिये तो, तो फिर मायामृषावादी जिसमें एक के बदले दोनों पापों का समावेश है। ऐसा मायामृषावाद यह संयुक्त पाप दोनों स्वतंत्र पाप-माया और मृषावाद से हजारगुना ज्यादा खतरनाक है। अनेक पापों का घर है यह सर्प की तरह तो अविश्वसनीय होगा ही परन्तु उससे भी ज्यादा विषवत् और किंपाक फलवत् होगा। साथ ही जैसे नम्र और शान्त बिल्ली का विश्वास नहीं किया जा सकता है वैसे ही माया जो शल्य रुप है और मृषावाद उसका सहायक है ऐसा मायामृषावादी दंभी-कपटी कैसे विश्वसनीय हो सकता है ?

मायामृषावाद में माया यह मृषावाद की पूरक है। जनक है। रक्षक है। मृषावाद को बढ़ाने वाली है और उसी तरह मृषावाद यह माया का पूरक है- सहायक है। मृषावाद-असत्य यह माया पर आवरण की तरह काम करता है। यदि मायावी पकड़ा जाय। तो मृषावाद उसका रक्षण करता है। मृषावाद माया का अंगरक्षक-चौकीदार है। इस तरह ये दोनों ही एक दूसरे से गाढ़ मित्रता से मिलेजुले है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। दोनों मिलकर एक साथ पाप कराते हैं। इस तरह कपटवृत्ति से पेट भरना यह अच्छा नहीं है। इसमें तो आत्मा चिकने कर्म बांधती है ! जैसे एक तो स्वभाव से ही अत्यन्त चंचल बंदर हो और अधूरे में पूरा उसे शराब पिलाई गई हो तो क्या परिणाम आएगा ? उस बंदर की नटखाट वृत्ति और चंचलता-शरारत और तोफान बढ़ेगा कि घटेगा ? वैसे ही एक तो माया वैसे भी कपटवृत्ति का घर है। माया मित्यात्व की माता है। बालक जिस तरह माता के गर्भ में वास करता है उसी तरह मिथ्यात्व मायारुपी माता के गर्भ में वास करता है, यही उसकी माता है। यह उसके संतान के रुप में उत्पन्न हुआ है। उसी तरह मायारुपी नटखाट कपटी बंदर को मृषावाद की शराब पिलाई जाय तो वह सत्यानाश कर देगा। इसीलिए मायामृषावाद को सत्रहवें क्रमांक पर अठारहवें मिथ्यात्व शल्य के पापस्थान के समीप रखा है और 18 वें के पहले 17 वें क्रम पर रखा है। जैसे माता पहले और उसके बाद संतान। इसी तरह मायामृषावाद पहले माता के पद पर है और मिथ्यात्व उसके पश्चात् 18 वें क्रम पर उसके संतान के रुप में है। अतः दोनों ही घातक है। कुलटा व्याभिचारिणी माता और लुच्चा-गुंडे का सा लड़का ये दोनों ही त्याज्य है। यह परिवार ही निंद्य है, त्याज्म है। अतः इस घर में अपनी बेटी देनी योग्य नहीं है। ऐसी माता सासु बने और ऐसा लड़का अपनी बेटी का (साधना का) पति बने यह उचित ही नहीं है ! सत्यानाश कर देगा !

मायामृषावाद के त्याग का उपाय:-

कुछ भी हो यह पाप त्याज्य है इतना तो सबको एक आवाज से कहना ही पड़ेगा और मानना ही पड़ेगा इसमें तो अंशमात्र भी शंका का स्थान नहीं है। अब इसको हटाने के लिये क्या किया जाय ? माया-मृषावाद छोड़ने का सबसे सरल उपाय है-सरलता और सत्य का आग्रह रखें। इनका आचरण

करें। सरलता के आचरण से माया हटेगी और सत्य के पालन से मृषावाद हटेगा। अतः सत्यव्रती बनना, सत्य का पालन करना चाहिये और सत्य के पालन के लिए यथार्थ तत्वज्ञान संपादन करने के लिए सच्चे तत्वज्ञानी साधु संत महापुरुषों का सत्संग समागम करना चाहिये। यथार्थ सिद्धांतों का परिशीलन करना चाहिये। नित्य सिद्धांतों का स्वाध्याय करना चाहिये इससे सम्यग्ज्ञान दशा प्राप्त होने पर सत्य की उपासना सिद्ध होगी और संसार का, सिद्धांत का सत्य स्वरुप दृष्टिपथ में आने के बाद शठता, कपटता, दंभ, नाश करने के लिये स्वभाव में सरलता लानी चाहिये। सरलता का अर्थ है शठ वृत्ति का त्याग करना। माया कपट का त्याग करना। दूसरी तरफ मन से सोचने और वचन से बालने तथा काया से क्रिया करने में तीनों वृत्ति में एकात्मता रखने का प्रयत्न करना चाहिये। सादा जीवन-उच्च विचार का पालन करना लाभ दायक है। उच्च कक्षा की विचार शक्ति रखनी चाहिये और जैसा विचार करें वैसा ही वर्तन भी करना चाहिये और उसी तरह अपने ऊंचे तथा सच्चे विचारों के अनुरुप ही वाग् व्यवहार भी करना चाहिये। अनुरुप ही बोलना भी चाहिये और जो मुंह से बोला है उसे पालने की पाबन्दी भी रखनी चाहिये। वाणी और वर्तन विपरीत नहीं रखना चाहिये। जैसा बोले वैसा ही आचरें तथा जैसा शुभ आचरण करें वैसा ही बोलना भी चाहिये। इस तरह करने से माया-कपटवृत्ति कम हो जाएगी और मृषावाद की वृत्ति भी शान्त होगी। यही मुख्य उपाय है। यही रामवाण इलाज है। यही अमोध औषधि है। अतः सभी इसी का आचरण करें।

(आगे और भी है...!)

क्षमा सभी से मांगना सब पर मम समभाव।
मुझे क्षमा कर दें आप सवंत्सरी पर्व प्रभाव।।

***

सद् गुरु सब को बांटते प्रवचन की जागीर।
अज्ञानी महापर्व पर फिर रहा रंक फ्कीर।।

***

दान शील तप भावना धर्म है चार प्रकार।
पर्युषण में भवितजन भरिये पुण्य भण्डार।।

***

विश्वमैत्री पर्व है संवत्सरी पर्व महान।
करेगा विश्व कल्याण होगा सर्वोदय जान।।

विश्व बन्धुत्व का पर्व

पर्युषण पर्व हमारी तमाम उष्णताओं को शीतलता प्रदान करने वाला पर्व है। प्राणी मात्र को अंधकार से प्रकाश की ओर, पशुत्व से देवतव की ओर, पाप से पुण्य की ओर एवं अत्याचार से सहानुभूति की ओर ले जाने वाला राजमार्ग है। इस अकेले पर्व ही में मानव जीवन को उत्तम बनाने, समानता और विश्व बन्धुत्व स्थापित करने वाले कितने सुन्दर पक्ष विद्यमान है। क्षमा, मृदुता, सरलता, शुचिता, सत्य, संयम, तप, त्याग, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ये दश गुण जब माला बनकर किसी के जीवन को सुशोभित करते हैं तब वहां होती है भावों की निर्मलता, चिन्तन की पारदर्शिता और प्राणीमात्र के प्रति आत्मीय निकटता इनका उदय हमारे भीतर के क्षितिज से ही संभव है।

वर्तमान में जब विश्व हिंसा की सर्वग्रासिनी ज्वाला से धधक और झुलस रहा है नैतिकता और मानवता नानाभरण भूषित नर्तकी की भांति अनृत के मंच पर थिरक रही है भौतिकवाद के स्वार्थी जबड़े और लिप्सा की जीभ एक एक करके मानव मूल्यों को चाट रही है। इस आपाधापी और अंधी दौड़ में ऊपर से सजा इन्सान भीतर ही भीतर खोखला हो रहा है, टूट रहा है। जीर्णारण्य बनते अन्तर्जगत के आत्मसुधार का एक ही मार्ग है। वैचारिक शुद्धि। चूंकि अच्छा या बुरा कुछ भी करने से पहले विचार का जन्म होता है और जब हमारे विचारों की मनोभूमि चारों कषायों और पांचों पापों से मुक्त होगी तभी हम मानव जन्म को सार्थक कर सकते हैं। शेक्सपियर ने कहा है कि- ***''देयर इज नथिंग आइदर गुड और बैड बट थिंकिंग मेक्स इट सो''*** चिन्तन के जो बीज हमारी चेतना में पड़ते है वही कालान्तर में अंकुरित पल्लवित और पुष्पित होते हैं। हमारा प्रयास हाना चाहिये कि हमारे विचार उग्रता और आतुरता के रथ पर सवान न होने पायें। आज ऐसे ही पर्व की घर घर पर आवश्यकता है। पर्युषण पर्व चारों ओर फैली सब प्रकार की उष्णता को शांत करने में समर्थ है। इस पावन पर्व पर हम पुनः अपने अन्तःकरण की जुताई करें और इन दश निर्मल भावों के बीज डाल दें। इनकी सुहानी फसल विलम्ब नहीं तत्काल उगती है और चारों और सुखा शान्ति समृद्धि का संदेश प्रसारित करती है। इस पावन पर्वराज की सभी को शुभकामनाएं व्रत (संकल्प) से संयम (पुरुषार्थ) से हम अपनी यात्रा सुनिश्चित करें।

- अंकित जैन, दिल्ली

क्षमा को बना लो आदत

संपूर्ण देश ने भक्तिभाव और उत्साह के साथ पर्युषण पर्व मनाये। यह आध्यात्मिक पर्व के साथ हमारी आत्मा और मन को शुद्ध करने का सुअवसर भी है। चारों ओर से आत्मा में रहनेवाले पाप-कर्मों को जलाए-तपाए वह पर्युषण पर्व है। पर्युषण एक आध्यात्मिक महापर्व है जो वैचारिक प्रदूषण से मुक्ति दिलाता है। यह तिथि में नहीं मनः स्थिति में पैदा होता है। एक बार प्रकट हो जाए तो फिर कभी जाता नहीं है।

पर्युषण पर्व क्षमा से प्रारंभ होता है, और क्षमा पर ही जाकर समाप्त होता है। पर्युषण पर्व तिथि में तो चले गए, लेकिन इस पर्व की भावनाओं को अभी तक हमने अपने हृदय में नहीं उतारा, इस पर्व को मनाने की सार्थकता एवं समाज के लिए हितैषी दूरगामी उपयोगिता तभी है, जब हम आज से लेकर आने वाले पर्युषण पर्व तक अपने मन व आत्मा को इतना शुद्ध एवं कषायरहित कर लें, कि हमारे अंतःकरण में शत्रुता एवं रागद्वेष का कोई भाव ही नहीं बचे। यह सच्चाई है कि हममें से कई व्यक्ति मानवीय प्रवृत्तियों के आगे विवश हैं और कईयों का अपने स्वभाव और मन पर जोर नहीं रहता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रतिद्वंदी या कथित शत्रु के प्रति वैर-भाव में कमी तो ला ही सकते हैं। हमें इस पर्युषण पर्व से आगामी वर्ष के पर्युषण पर्व की अवधि तक अपनी आत्मा एवं मनःमस्तिष्क की स्थिति का आत्ममंथन एवं आत्म विवेचना करनी होगी, और यह देखना होगा कि हम अपने भीतर क्षमा के भाव को कितना प्रगाढ़ करते हुए शत्रुता व राग-द्वेष के भाव में किस स्तर तक कमी ला पाए। हमारे मन में कषाय भाव और राग भाव बढ़े अथवा कम हुए। क्या हम इस अवधि में अपने शत्रुओं की संख्या कम करने और मित्रों की संख्या में वृद्धि करने में सफल रहे। यदि हम इन सभी प्रश्नों का सकरात्मक उत्तर देकर क्षमा की कसौटी पर खुद को खरा साबित करते हैं, तभी हम दृढ़भाव से यह कहने की स्थिति में होंगे, कि हां, हमने इस बार क्षमावाणी पर्व पूरे मन और आत्मा से मनाया है, यदि हम ऐसा नहीं कर सकें तो इस बार का क्षमावाणी पर्व भी पूर्व के वर्षों की तरह महज औपचारिकता बनकर रह जाएगा।

क्षमा विशुद्ध तौर पर धारण करने का भाव है। न क्षमा मांगी जाती है और न दी जाती है, बल्कि क्षमा तो धारण की जाती है। जो क्षमा धारण करता है, वह क्षमा मांगने या क्षमा करने की औपचारिकता से दूर रहता है। क्षमा मांगने और क्षमा करने के लिए दो लोगों की आवश्यकता पड़ती है, एक क्षमा मांगने और एक क्षमा करने वाले की। लेकिन यदि हम क्षमा को अपने जीवन का स्वभाव बना लें, तो क्षमायाचक-क्षमाकर्ता का विकल्प ही समाप्त हो जायेगा। ज्यादा श्रेयस्कर यह होगा कि हम दूसरे के प्रति राग-द्वेष के भाव का शमन करते हुए अंर्तआत्मा से किन्हीं गलतियों के लिए उसे क्षमा कर दें, और अपने मन में पूरी संवेदना से उन त्रुटियों के लिए भी क्षमायाचना करें, जो उसके प्रति हमसे हुई हैं, इस तरह हम क्षमा को अपने मन व हृदय में धारण कर सकेंगे। हमाने मन की यह धारणा किसी से कहकर बताने की जरुरत नहीं है, बल्कि हमारे कार्य-व्यवहार और व्यक्तित्व से ही यह अभिव्यक्त होगा, कि हमने स्थायी रुप से क्षमा को अपने मन में बसा लिया है, एक बात और, क्षमा धारण करने में जरुरी नहीं कि हमारा किसी से द्वेष या बैर हो, क्षमा तो प्राणीमात्र के प्रति धारण की जा सकती है। अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि हम क्षमा तभी धारण करें, जब हमारा किसी से राग-द्वेष अथवा दुश्मनी का भाव हो, अर्थात् शत्रुता के भाव से निलिप्त रहने पर भी क्षमा को धारण किया जा सकता है।

दर असल, क्षमा मांगने और देने की विषयवस्तु नहीं है, यदि हम क्षमा मांगने आएं, कषाय-द्वेष के भावों से चर्चा करें और क्षमा को अपनी आदत बना ले तो बच्चों का खेल-खिलौना हो जाएगा क्षमा। मुझे यह कहने में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं लगती कि आज क्षमावाणी एक औपचारिकता बनकर रह गई है। मुझे बड़ा आश्चर्य और क्षोभ होता है, जब मैं देखता हूं कि हम क्षमा भी मित्रों से मांगते हैं, दुश्मनों से नहीं, क्षमा में मां छिपी है, जिस प्रकार एक मां अत्यन्त क्षमाशील होती है, उसी प्रकार धर्म के प्रमुख दस लक्षणों में उत्तम क्षमा की शक्ति अनंत और अतुल्य है। उत्तम क्षमा साधुता की परिचायक है। धर्म के इस महालक्षण का साधु दृढ़ता से पालन करते हैं। श्रावक और साधक को जीवन में क्रोध पर विजय पाने के लिये क्षमा का गुण अपनाना ही चाहिये। मैंने इसी लेख में पहले की पंक्तियों में कहा था कि धर्म क्षमा है, और चर्चा क्रोध की हो, तो सुनने में अचरज

भरा लग सकता है, लेकिन मैं यहां यह भी कहना चाहूंगा कि क्षमा के गुण के ज्ञान हेतु चर्चा क्रोध की होना पूर्णतः होना मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि सारी दुनिया जितनी क्रोध से परिचित है, उतनी क्षमा से नहीं। यह नियम है कि हमेशा परिचित से अपरिचित का ज्ञान होता है। इसलिये अपरिचित क्षमा को समझने के लिए चिरपरिचित अनुभूत क्रोध को समझना आवश्यक है। जब हम क्रोध का शमन और दमन करना सीख लेंगे और इसमें पूर्णतः पारंगत हो जाएंगे, तो क्षमा हमारे कार्य व्यवहार में स्वमेव ही आ जाएगी।

महापर्व में क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, अकिंचन , ब्रह्मचर्य, की शिक्षा दी गई है। प्रत्येक लक्षण का अपना ही विशिष्ट महत्व है। लेकिन इनमें क्षमा का कुछ अधिक ही महत्व है । आज हमारा समाज जिन चुनौतियों से रुबरु है और देश-दुनिया में जैसे हालात बने हैं। विभिन्न राष्ट्रों के साथ समाजों और संप्रदायों में कटुता का भाव देखने को बदल रहा है। एक दूसरे को नीचा दिखाकर प्रतिद्वंदी को कमजोर करने की समाज में प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इन परिस्थितियों में समाज के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा क्षमा को अपने मन और व्यवहार में अंगीकार करने की आवश्यकता और प्रबल हो गई है। जब हम पूरे संकल्प भाव से क्षमा को अपना पाएंगे तभी समाज का सद्भाव और सौहार्द के साथ इस धरा की खुशहाली को बचा पाएंगे। यह मैं अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूं कि जिस व्यक्ति के हृदय में क्षमा का भाव नहीं होता है, वह स्वभाव से कठोर और कटु होता है । ऐसा व्यक्ति समाज के लिए कभी सुखदायी नहीं हो सकता। इसलिए हमें प्रत्येक व्यक्ति के हृदय को क्षमाशील बनाना होगा। समाज को क्षमा के पथ पर मोड़ना होगा। हमारी आध्यात्मिक संस्कृति में क्षमा कोई नया अथवा अनूठा शब्द नहीं है बल्कि युगों-युगों से इसका महत्व और प्रासंगिकता बनी हुई है। हमारे महान तीर्थकर क्षमा पर ही जोर देते रहे हैं। यदि आप मेरी इन पंक्तियों में से किसी एक सीख को भी अपने जीवन व कार्य-व्यवहार में ढाल सकें, तो मैं अपनी लेखनी को सार्थक एवं जीवन को धन्य समझूंगा।

क्षमावाणी के महान पर्व पर अंतःकरण की शुद्धिपूर्वक। मैं प्राणी मात्र के प्रति क्षमा धारण करता हूं....

ओम नमः सबसे क्षमा....

सबको क्षमा.... उत्तम क्षमा....

क्षमा

✲ ''क्षमा'' से ही खुशहाल बनेगी यह धरती, यह समाज....

✲ न क्षमा मांगी जाती है और न दी जाती है, बल्कि क्षमा तो धारण की जाती है।

सर्वोपरि मानव

तिजोरी में रखी हुई चांदी की कटोरी, सोने की कटोरी, हीरे वगैरह के बीच बातचीत शुरु हुई।

1-चांदी की कटोरीः- मैं माने मैं ही ! मेरे जैसा इस दुनिया में कोई नहीं।

2- सोने की कटोरीः- अब रहने दे तूं ! अगर मैं हाजिर रहूं तो तुम्हें कौन पूछता है ?

हीराः- ए ! तूँ अपना बड़प्पन बहुत न दिखा ! हमारी चमक के सामने तू तो बिलकुल मैली है ! समझी ?

तिजौरीः- अरे.... तुम सब किसलिए झगड़ते हो ? आखिर तुम सब तो मेरे पेट में ही पड़े हुए हो न ?

तालाः- रहने दो.... रहने दो.... ए तिजौरी ! मेरे बिना तुम्हारी किम्मत ही क्या है ?

चाबी :- तू भी अपनी बड़ाई दिखानी रहने दो ! आखिर तो तू भी मेरे इशारे पर नाचती है ना ! इस चर्चा को सुनकर पास में खड़े सेठ का हाथ बोल उठाः- ए चाबी ! तू मेरे बिना थोड़ी भी नहीं चल सकती.... यह तो मालूम है न ? तुझे घुमानेवाला हाथ मैं हूं.... इसे जरा सोच !

सेठ ने कहाः- ए हाथ ! तू अपनी बुद्धिमानी मत दिखा ! आखिर मैं तेरा मालिक हूं। अगर मैं तुझे आज्ञा करुं तो ही तू सब प्रवृत्ति कर सके.... मुझ से अगर तू अलग हो जाय तो तेरा दाम कौन पूछता है ?

सही बात है। इस दुनिया में मनुष्य सर्वोपरि है। मनुष्य है इसलिए सोने-हीरे के दाम है। जहां मनुष्य नहीं, वहां के हीरों का दाम कौन पूछता है ?

पर्युषण : विरक्ति और वैराग्य का पर्व

पर्युषण पर्व का पहला दिन:-

✽ क्षमा का दीप जलाकर क्रोध का भूत भगाओ।

✽ क्षमा रुपी सूरज के आगे क्रोध को अंधेरा टिक ही नहीं सकता, जहां सूरज है वहां अंधेरा नहीं, जहां क्षमा है वहां क्रोध नहीं।

तुम सारी रात अंधेरा को भागने के लिये लकड़ी पटकते रहो, तुम थक जाओगे, लकड़ी टूट जायेगी, लेकिन अंधेरा नहीं भगेगा। मेरे भाई, अंधेरे को भगाने के लिए डंडे की जरुरत होती है। मैं कहता हूं तुम उस अंधेरों में बस एक दीप जला दो। अंधेरा दीपक के जलते ही टिक नहीं पायेगा। भगवान श्रीमहावीर ने क्रोध को बुरा नहीं कहा, उन्होंने तो क्षमा का स्वागत किया है। क्रोध को बुरा कहने से नहीं बल्कि क्षमा धारण करने से क्रोध स्वयं ही छूट जाता है। अपने जीवन में क्षमा का दीपक जलाए रखोगे तो क्रोध तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़पायेगा।

एक बार अंधेरे ने ईश्वर से शिकायत की कि इस सूरज ने मेरी आफत कर दी है, वह आते ही मुझे भगा देता है। मेरा जीवन मुश्किल कर दिया है, ईश्वर ने जब सूरज से कहा कि - अंधेरे को क्यों परेशान करते हो उसे भी जीने दो, तब सूरज ने कहा कि -हे भगवान अंधेरा मुझसे आकर मेरे सामने बोले कि मैंने उसे परेशान किया है अरे अंधेरे की क्या हिम्मत कि वह सूरज के सामने खाड़ा हो जाए। भगवान श्रीमहावीर हमारे हाथ में क्षमा रुपी ऐसा सूरज रख गये है जिससे वैचारिक प्रदूषण से हमारा जीवन खंडित नहीं हो सकता।

व्यक्ति भूख प्यास तो सहन कर लेता है किसी की बात सहन नहीं करता

तुमसे कहा जाए कि दिन भर निर्जला उपवास कर लो तो बड़ी सहजता से कल लेते हो, व्यक्ति भूख, प्यास तो सहन कर लेता है, लेकिन किसी की एक बात सहन नहीं करता। मेरे भाई क्षमा का नीर अपने पास हर वक्त रखो। फिर देखो क्रोध की अग्नि तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़सकेगी।

पर्युषण पर्व का दूसरा दिन:-

✽ धर्म से जीवन को सरल,सहज और मधुर बनाओ।

✽ बिना विनम्रता और सरलता के मानव जीवन की सार्थकता नहीं।

✽ अहंकार सबसे बड़ी समस्या, समर्पण है इसका समाधान।

✽ दौलत को नहीं, दिलों को जीतना सीखो।

धर्म का अर्थ होता है कोमलता, विनम्रता का भाव होना। जीवन को सरल, सहज और मधुर बनाओ, आज व्यक्ति के जीवन की मूलभूत समस्या है अहंकार। आज मानव अंधकार से भरा जा रहा है। तुमने चक्रवर्ती के वैभव के बारे में तो सुना ही होगा, एक चक्रवर्ती छः खण्ड का अधिपति होता है, जिसके 96 हजार रानियां, 18 करोड़ घोड़े, 84 लाख हाथी हों उसे भी इतना अहंकार नहीं होगा, जितना आज थोड़ा सा धन आ जाने से तुम्हें हो जाता है। विचार करो आखिर क्या है तुम्हारे पास, किस बात का अहंकार करते हो, तुम्हें कुछ मिला है यह बुरा नहीं लेकिन मिलने के बाद इंसानियत से नाता तोड़ना बुरा होता है। मेरे भाई, अहंकार से ज्यादा अकड़ो मत, क्योंकि अकड़-मकड़ कर चलता है यमराज उसे जल्दी पकड़ता है और जो विनम्रता से जीवन जीता है उसकी दीर्घायु होती है। दौलत को नहीं दिलों को जीतना सीखो। याद रखना दौलत से व्यक्ति बड़ा नहीं होता, जो किसी के काम न आये वह काहे का बड़ा आदमी। अरे बड़ा तो वहीं होता है जिसमें बड़प्पन हो, बड़ों को सम्मान करने का और छोटो को वात्सल्य देने का गुण हो, जिसका जीवन दूसरों के काम आये। दौलत तो आज है कल न रहे पर जो लोग विनम्रता से जीवन जीते है वह सभी के चहेते होते हैं। भगवान श्रीमहावीर कहते हैं कि- असफलता में हताश मत हो और सफलता मिलने पर अभिमान मत करो। जो लोग दोनों परिस्थितियों में समभाव रखते है वह सम्यक दृष्टि होते हैं।

अहंकार के पास पैर तो होते हैं आंखें नहीं होती अहंकार अंधा होता है। उसके पास पैर तो होते हैं पर आंखें नहीं होती। तभी तो रावण के पास नेत्र होते हुए भी अहंकार में अंधा हो गया था। उसे लंका की बर्बादी नहीं दिख रही थी। अहंकार भीतर की आंखें फोड़ देता है। इस अहंकार से बचने के लिये जीवन में सरलता और सहजता को स्वीकार करो।

तीसरा दिन:-

✽ जो सरल है वही संत है नजरों से जो गिर जाए, मुश्किल है सम्हल पाए।

✽ मन वचन काय की कुटिलता को त्याग कर जीवन में लाओ सरलता।

सरलता के भावों को आर्जव धर्म कहते हैं जो दूसरों को छलता है उसके सीने में छाले हो जाते हैं। दूसरों को धोखा देने वाला एक दिन खुद धोखा खाता है। जिसकी नीयत

खराब उसके नतीजे भी खराब ही होंगे। तुम कोई भी काम करके देख लो यदि तुम्हारे मन में खोट है तो निश्चित ही परिणाम गलत ही आयेंगे।

मायाचारी का जीवन मत जीओ। जिसके अंतरंग में कुछ हो बाहर कुछ और हो ऐसा जीवन तो मायाचारियों का होता है। तुमने बगुला देखा होगा, जब नदी के किनारे वह पानी में श्वेतता को धारण किये खड़ा होता है तो ऐसा लगता है कि वह ध्यान में हो, लेकिन बगुला का ध्यान तो मछली पर होता है। तुम मछली पर नहीं श्रीमहावीर पर ध्यान लगाओ। सावधान रहो ऐसे लोगों से जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं, ध्यान रखना अत्यधिक चापलूसी करने वाला भी तुम्हारी जड़ों को काट सकता है। चापलूस लोग भी बगुले के समान होते हैं, दिखते कुछ हैं और होते कुछ और है। इससे तो कौआ अच्छा होता है जो अन्दर से भी काला और बाहर से भी काला दिखता है। मेरे श्रीमहावीर कहते हैं -दोहरा जीवन मत जीओ, तुम बाहर से जैसे सरल दिखते हो उतना ही भीतर से भी सरल और सहज बनो। मन, वचन, काय की कुटिलता को त्याग कर जीवन में सरलता, सहजता आने को ही आर्जव धर्म कहा जाता है।

छल कपट से मिली सफलता दुःख ही देगी

तुम कितना भी मायाचारी, छल कपट कर लो लेकिन सफलता से दूर ही रहोगे और तुमने जोड़-तोड़ के सफलता हासिल कर भी ली तो यह बात मानकर चलना इस अधर्म की सफलता से तुम्हें सुख नहीं मिल सकता। अरे सफलता तो पुण्य पाप के संयोग और व्यवस्थित तरीके से किये गये पुरुषार्थ से मिलती है। कहते है पुण्य का उदय आता है तो हाथ में रखी मिट्टी भी सोना बन जाती है और पुण्य क्षीण होता है तो हाथ में रखा हुआ सोना भी राख बन जाता है।

चौथा दिन :-

*** संतोष के जल से करो मन को पवित्रा।**

*** तन के साथ मन को भी धो लो।**

*** अपने मन को निर्मल और पवित्र बनाओ।**

*** दौलत की चकाचौंध में विनम्रता को मत छोड़ो।**

गंगा में नहाने से ही यदि मानव पवित्र हो जाए तो उस पानी में रहने वाली मछली तो सबसे ज्यादा पवित्र हो जाए, फिर उसमें दुर्गन्ध क्यों आती है। इस कलयुग में तो गंगा भी मैली हो गई है, प्रदूषित हो गई है। गंगा में नहाने से तन की पवित्रता तो आ सकती है, लेकिन मन की पवित्रता के लिए तो संतोष के जल से अपने विचारों में निर्मलता लाना होगी। भगवान श्रीमहावीर ने तन की शुद्धि पर ध्यान नहीं दिया उन्होंने तो मन तथा आत्मा की शुद्धि को अधिक महत्वपूर्ण बताया। तुम अपने मन को निर्मल और पवित्र बनाओ तो एक दिन ईश्वर तुम्हें खोजता हुआ तुम्हारे पास आ जायेगा। तुम महान पुण्य लाये हो तो दौलत तो मिलेगी ही, बस इस दौलत को पाकर तुम्हारे भीतर बदसलूकी की दुर्गन्ध न आये। धनवान होते हुए भी विनम्रता की सुगंध आना चाहिये। जैसे हीरा अपना मूल्य स्वयं नहीं बताता तुम भी हीरे के समान बनो। आज इंसान के पास चार पैसे क्या आ जाते है उसके विचार और उसका व्यवहार बहुत हल्का हो जाता है। जीवन में प्रभु की कृपा अवश्य कमाओ यही तुम्हारे साथ जायेगी।

मन मैला और तन को धोए, कैसे आतम शुद्धि होय

मान्यवर, सारा जीवन हो गया इस तन को धोते हुए और कब तक धोते रहोगे। क्या समझते हो कि इस तन को धोने से आत्मशुद्धि हो गई, नहीं मेरे भाई, अभी मन को मांझना शेष है। आत्मसाधना के लिये अपने मन को निर्मल बनाओ, यह अकड़, अभिमान, कटुता, लोभ के भावों को निकालना होगा। भीतर की पवित्राता से अंतरंग में सत्य का दीपक जल उठेगा।

पर्युषण पर्व का पांचवा दिन-

*** सत्य तो अंतरंग से प्रकट होना चाहिये।**

*** सत्य कड़्वा नहीं मधुर होता है, कड़्वा तो मन होता है।**

इस दुनिया में सत्य को अपमानित किया जाता है, यह दुनिया सत्य को सहजता से नहीं स्वीकारती। क्योंकि सत्य अकेला खड़ा होता है झूठ के साथ पूरा गिरोह होता है फिर भी अंतिम विजय सत्य की ही होती है। कहा जाता है कि सत्य कड़्वा होता है यह तो सत्य पर मिथ्या लांछना है, सत्य तो स्वाभिविक रुप से मधुर होता है। सत्य में तो प्राकृतिक मिठास होती है, मन और सोच कड़्वे होंगे तो सत्य कड़्वा ही लगेगा। मेरे भाई सत्य से ज्यादा सुखद कुछ नहीं होता। मुख से सत्य बोल भी दिया जाए तब भी मन तो षड़यंत्र में लगा रहता है इसीलिए सत्य मात्र वचनों तक सीमित नहीं हो सकता, सत्य अंतरंग से प्रकट हो जाना चाहिये। सत्य का साथ देने वाला परेशान तो हो सकता है, परास्त नहीं हो सकता। तुमने तीन घंटे की फिल्म में देखा होगा कि ढाई घंटे तक असत्य के रुप में विलेन हीरो पर हावी होता है, खूब षडयंत्र रचता है लेकिन फिल्म के अंत में जीत हीरो की, सत्य की ही होती है, कुछ भी कर लो सत्य तो जीतकर ही रहेगा।

<u>परीक्षा सत्य की ही होती है</u>

जर्कन नग को कोई नहीं परखता, परख तो हीरे की ही होती है। जो औरों के लिए जीता है वह अमर हो जाता है जिसने विष पीया वह शंकर हो गये, जिसने जहर का प्याला पीया वह मीरा बन गई, जिसे छेदा गया वह मोती बन गया, जिसे काटा गया वह हीरा बन गया, सत्य की परीक्षा में जो सफल हो जाता है वह निखार जाता है।

पर्युषण पर्व का छटवां दिन :-

✽ जीवन को अनुशासित करता है संयम।

✽ संयम का दूसरा नाम होता है जीवन की सुरक्षा।

✽ बिना संयम और नियम के जीवन की यात्रा लक्ष्यविहीन।

जब एक बेल बांस से बंधती है तो वह ऊपर की ओर उठती है और एक बाल्टी की कड़ी में रस्सी बांध दी जाती है तो वह बाल्टी कितनी गहराई में चली जाए वह रस्सी उसे निकाल ही लायेगी, मेरे भाई इस जीवन की बेल को धर्म के बंधन से बांध दो तो निश्चत जीवन ऊपर ही उठेगा। सत्य बड़ा नाजुक होता है, जीवन में सत्य आ भी जाए तो उस सत्य को समय की आंधियों से बचाने के लिए अपने मन के दीये पर संयम का एक कांच लगा लो। यह मन जिज्ञासाओं से भरा होता है, कैसे मिटेगें मन के यह विकल्प तुम संकल्प करो विकल्प स्वयं ही मिटेगा।

संयम का दूसरा नाम जीवन की सुरक्षा है, संयम की पटरी पर चलने वाली गाड़ी मोक्ष के स्टेशन पर पहुंचती है। असंयमी व्यक्ति उस कोहलू के बैल के समान होता है जो चलता तो दिन भर लेकिन पहुंचता कहीं नहीं है, ऐसे ही जिसके जीवन में कोई संयम नहीं, नियम नहीं, संकल्प नहीं उसके मानव जीवन की यात्रा सार्थक नहीं हो सकती। जीवन को ऊंचाईयों पर ले जाने के लिये कुछ तो नियम में बंधना होगा मेरे भाई। जैसे हाथी को वश में करने के लिये अंकुश का होना जरुरी है, वैसे ही इस मन के हाथी पर संयम का अंकुश जरुरी होता है। मैं तो कहता हूं बिना संयम के जीवन की यात्रा लक्ष्य विहीन होती है।

<u>हर परिस्थिति में जीना सिखाता है संयम</u>

जो लोग संयम और नियम में बंधकर जीवन जीते है वह हर परिस्थिति में जीना सीख जाते है, जैन दर्शन के अनुसार व्यक्ति का समय एक सा नहीं रहता, पता नहीं कब कैसी परिस्थिति निर्मित हो जाये, जो संयमी व्यक्ति सब कुछ होते हुए भी सीमितता में जीवन जीता है वह प्रतिकूल परिस्थिति में आनन्द के साथ जीवन जी लेता है।

पर्युषण पर्व का सातवां दिन:-

✽ आत्मा तपने के बाद ही परमात्मा बनती है।

✽ बिना शरीर को तपाये आत्मा नहीं निखरती।

जो तपता नहीं है वह पकता नहीं है, सोना भी तपने के बाद निखरता है, रोटी भी पकने के बाद स्वादिष्ट होती है, ऐसे ही आत्मा भी जब तक तपेगी नहीं वह परमात्मा नहीं बन सकती, संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनका जीवन देखो कितनी तपस्या की है उन्होंने, एक डॉक्टर, इन्जीनियर, वकील, वैज्ञानिक को देखो उन्होंने भी कितनी साधना की होगी इस मुकाम तक पहुंचने में। आत्मा में परमात्मा को देखने वाला सम्यक दृष्टिहोता है, जैन दर्शन के अनुसार आत्मा को शुद्धात्मा बनाने के लिये स्वयं को तपस्या की भट्टी में झोंकना पड़ता है। भगवान श्रीमहावीर कहते हैं कि- मात्र भोजन को छोड़ना ही तपस्या नहीं है, मन पर संयम रखकर आत्मसाधना करना तप होता है,मात्र इस शरीर को सुखाने से कुछ नहीं होगा अपने कर्मो को सुखाने का प्रयास करो, पर्वत की चोटी पर बैठ जाने का अर्थ तप नहीं होता, इस संसार में रहकर भी जैसे कीचड़ में कमल की तरह जीवन जीओ, कीड़े मकोड़ों की तरह कीचड़ के भीतर डुबकी मत लगाओ।

<u>आत्मा को तपाने के लिये यह शरीर को तपाना होगा</u>

किसी ने मुझसे पूछा कि जब यह कहा जाता है कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है तो फिर आत्मा को तपाने के लिये इस शरीर को क्यों कष्ट देते हो मैंने उस व्यक्ति से कहा कि जब तुम दूध गरम करते हो तो उसे बर्तन में डालकर आग पर रखते हो तो बताओ कि पहले दूध गरम हुआ या बर्तन। जैसे बिना बर्तन गरम हुए दूध गरम नहीं हो सकता वैसे ही बिना शरीर की तपस्या के आत्मा नहीं तप सकती।

पर्युषण पर्व का आठवां दिन:-

✽ जीवन में अर्जन के साथ विर्सजन भी आवश्यक है।

✽ ज्यादा परिग्रह करने से नरक की यात्रा होती है।

✽ जोड़ने के साथ छोड़ना भी सीखो।

✽ जिन्दगी में यदि जोड़ते ही गये, कुछ न छोड़ा तो डूब जाओगे।

✽ त्याग से पाप का मूल चुकता है, दान से पाप का ब्याज चुकता है।

जोड़ना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन जोड़ने के साथ छोड़ने की भी कला सीखो। जैन दर्शन के अनुसार तो हिंसा, चोरी, झूठ से भी बड़ा पाप परिग्रह का बताया है, परिग्रह का अर्थ है अपनी आवश्यकता से अधिक जोड़ना, कहा जाता है

यह धरा पर जितने भी महापुरुष हुए है उनके त्याग से दुनिया उन्हें पहचानती है, लेकिन आज जमाना बदल गया है जो जितना परिग्रह और धन जोड़ता है उसे उतना ही सम्मान मिलता है। एक हत्यारा, चोरी करने वाला या झूठ बोलने वाले को दुनिया घृणा की निगाह से देखती है, लेकिन जो परिग्रह करके अपनी तिजोड़ी भरता है लोग उसका बड़े ही आदर के साथ नाम लेते है, मैं कहता हूं सम्मान जोड़ने का नहीं त्याग का होना चाहिये, मेरे महावीर तो कहते है कि अत्यधिक परिग्रह करने वाला नरक गति में जाता है।

जो लुटाता है वह पाता है, जो छुपाता है वह उखाड़ा जाता है।

तुमने देखा होगा आम, अमरुद, अनार के पेड़ अपने फलों को दूसरों को देते रहते हैं और एक बार बंसत के बाद उसमें फिर से फल आ जाते है, और आलू, प्याज, गाजर, मूली को जमीन में छुपा कर रखते है वह जड़ से उखाड़ दिये जाते हैं। मेरे भाई तुम्हें जो मिला है वह तुम्हारे पुण्य से मिला है, तुम उसका उपयोग अपनी आवश्यकता में करो और अतिरिक्त धन को गरीब, असाह तथा धर्म के क्षेत्र में लगाओ। धन को अत्यधिक जोड़ते हुए पाप के गठरी को भारी मत करो।

❋ जहां न रहे संकल्प विकल्प वही है आकिंचन धर्म।

❋ मैं और मेरे पन को त्यागो, तभी आत्मस्वरुप को जान पाओगे।

❋ धर्म कहता है अधिकारों की बात नहीं, कर्त्तव्यों का निर्वाह करो।

❋ भावना ऐसी हो-गुणीजनों को देख हृदय में प्रेम के भाव उमड़ जाए।

जीवन में सन्यास आ जाए और उस सन्यास का भी अहंकार हो जाए तो मेरे भगवान महावीर कहते हैं कि ऐसा सन्यास तुम्हारे आत्मकल्याण में कभी सार्थक नहीं होगा। जहां संकल्प विकल्प न रहे वही तो आकिंचन धर्म होता है, लोग सब कुछ पा लेते हैं और सब कुछ पाने के अहंकार की चादर भी ओढ़लेते हैं, अहंकार से भर जाते है, ऐसा व्यक्ति सब कुछ पाकर भी खाली हाथ ही रहता है, किस बात का अहंकार करता है आदमी, क्या लेकर आया था और क्या लेकर जाएगा, मेरे भाई जो पाया है इस संसार से मिला है,और जो त्यागा है वह स्वयं के हित के लिए त्यागा है।

मैं और मेरे पन का भाव जब तक अंतरंग में रहेगा तब तक तुम आत्म स्वरुप को नहीं पहचान सकते और बिना आत्मा के स्वरुप को पहचाने कैसे होगा आत्मा का कल्याण। जैन दर्शन कहता है कि यदि साधना बाहर की होगी तो व्यक्ति अहंकार के भाव से भर जाता है लेकिन जब अंतरंग में उतरना है तो भावों में किंचित भी मैं और मेरा पन का भाव न रहे।

कौन किसका पालनहार है।

तुम क्या यह सोचते हो कि तुम किसी को पाल रहे हो, यह दुनिया, यह समाज, यह घर तुम्हारे बलबूते पर चल रहा है, मिटा दो यह गलत धारणा, यह दुनिया है कल भी चलती थी और जब तुम नहीं रहोगे तब भी चलेगी। जो जीव इस दुनिया में आता है वह अपना पुण्य लेकर आता है, तुम किसी को क्या पालोगे। एक छिपकली सोचती है कि यह मैं न रहूं तो यह छत गिर जाएगी, इस तरह की सोच में जीवन मत जीओ।

❋ अपनी ऊर्जा का नाश मत करो, ऊर्जा को जीवन के सृजन में लगाओ।

❋ संतान को तो जानवर भी जन्म देता है, हृदय में परमात्मा को जन्म दो।

❋ ब्रह्मचर्य की साधना से होता है आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त।

व्यक्ति के शरीर में ऊर्जा का स्त्रोत नाभि में होता है, वासना से ऊर्जा नीचे की और, और साधना से ऊर्जा ऊपर की ओर प्रभावित होती है, ब्रह्मचर्य की साधना बड़ी ही कठिन साधना होती है, मोक्ष महल का अंतिम सौपान ब्रह्मचर्य होता है, ब्रह्म नाम है आत्मा का,आत्मरमण,आत्मलीनता, आत्मचर्या में जीना ही ब्रह्मचर्य है।

काम से पैदा होकर राम में जीवन जीना ही मानव जीवन की उत्कृष्ट सफलता होती है, मेरे भाई तुम कमल की तरह जीवन जीओ। कमल पैदा तो कीचड़ में होता है, लेकिन वह कीचड़ से ऊपर उठकर स्वच्छता का जीवन जीता है, तुम भी संसार में विषय वासनाओं के बीच रहते हुए निर्विकार और ब्रह्मचर्य धर्म को अपनाते हुए परमात्मा को पाने का निरंतर प्रयास करते रहो।

ब्रह्मचर्य की साधना ही मुक्ति की युक्ति है- सन्यास की राह पर बढ़ने के लिए ब्रह्मचर्यमय जीवन अत्यन्त आवश्यक है। मैं तो कहता हूं कि ब्रह्मचर्य की साधना ही मुक्ति की युक्ति है। आत्मस्वरुप होकर आत्मसाक्षरता, आत्मसंवाद से अपने आत्मकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करें।

अभिनंदन है पर्व पर। हे पर्युषण सार।
मलिन मानसों में भी भर देना फिर भाव उदार॥

सेवा का संतोष

वासुभाई और वीणा बहन गुजरात के एक शहर में रहते हैं आज दोनों यात्रा की तैयारी कर रहे थे, तीन दिन का अवकाश था, पेशे से चिकित्सक हैं लंबा अवकाश नहीं ले सकते थे परन्तु जब भी दो-तीन दिन का अवकाश मिलता छोटी यात्रा पर कहीं चले जाते हैं, आज उनका इन्दौर-उज्जैन जाने का विचार था। दोनों जब साथ-साथ मेडिकल कॉलेज में पढ़ते थे वहीं पर प्रेम अंकुरित हुआ था और बढ़ते-बढ़ते वृक्ष बना दोनों ने परिवार की स्वीकृति से विवाह किया। दो साल हो गए अभी संतान कोई है नहीं, इसलिए यात्रा का आनंद लेते रहते हैं। विवाह के बाद दोनों ने अपना निजी अस्पताल खोलने का फैसला किया, बैंक से लोन लिया, वीणा बहन स्त्री-रोग विशेषज्ञ और वासु भाई डॉक्टर ऑफ मैडिसिन है इसलिये दोनों की कुशलता के कारण अस्पताल अच्छा चल निकला । यात्रा पर रवाना हुए, आकाश में बादल घुमड़ रहे थे, मध्यप्रदेश की सीमा लगभग 200 कि.मी. दूर थी बारिश होने लगी थी, म.प्र. सीमा से 40 कि.मी. पहले छोटा शहर पार करने में समय लगा, कीचड़ और भारी यातायात में बड़ी कठिनाई से दोनों ने रास्ता पार किया। भोजन तो म.प्र. में जाकर करने का विचार था परन्तु चाय का समय हो गया था, उस छोटे शहर से 4-5 कि.मी. आगे निकले। सड़क के किनारे एक छोटा सा मकान दिखाई दिया जिसके आगे वेफर्स के पैकेट लटक रहे थे उन्होंने विचार किया कि यह कोई होटल है । वासुभाई ने वहां पर गाड़ी रोकी, दुकान पर गए, कोई नहीं था, आवाज लगाई ! अंदर से एक महिला निकल कर आई, उसने पूछा- क्या चाहिए भाई ?

वासुभाई ने दो पैकेट वेफर्स के लिए और कहा बहन ! दो कप चाय बना देना थोड़ी जल्दी बना देना हमको दूर जाना है। पैकेट लेकर गाड़ी में गए, दोनों ने पैकेट के वैफर्स का नाश्ता किया, चाय अभी तक आई नहीं थी, दोनों कार से निकल कर दुकान में रखी हुई कुर्सियों पर बैठे वासुभाई ने फिर आवाज लगाई, थोड़ी देर में वह महिला अंदर से आई और बोली- भाई ! बाड़ेमें तुलसी लेने गई थी, तुलसी के पत्ते लेने में देर हो गई, अब चाय बन रही है। थोड़ी देर बाद एक प्लेट में दो मैले से कप लेकर वह गरमा गरम चाय लाई, मैले कप देखकर वासु भाई एकदम से अपसेट हो गए और कुछ बोलना चाहते थे परन्तु वीणा बहन ने हाथ पकड़कर उन्हें रोक दिया चाय के कप उठाए, उनमें से अदरक और तुलसी की सुगंध निकल रही थी दोनों ने चाय का एक सिप लिया। ऐसी स्वादिष्टऔर सुगंधित चाय जीवन में पहली बार उन्होंने पी, उनके मन की हिचकिचाहट दूर हो गई, उन्होंने महिला को चाय पीने के बाद पूछा, कितने पैसे ? महिला ने कहा-बीस रुपये। वासु भाई ने सौ का नोट दिया। महिला ने कहा कि भाई छुट्टा नहीं है, बीस रुपये दे दो, वासुभाई ने बीस रुपये का नोट दिया, महिला ने सौ का नोट वापस किया। वासुभाई ने कहाकि- हमने तो वैफर्स के पैकेट भी लिए हैं ! महिला बोली- यह पैसे उसी के है, चाय के नहीं। अरे ! चाय के पैसे क्यों नहीं लिए ? जवाब मिला- हम चाय नहीं बेचते है, यह होटल नहीं है फिर आपने चाय क्यों बना दी ? अतिथि आए ! आपने चाय मांगी, हमारे पास दूध भी नहीं था यह बच्चे के लिए दूध रखा था परन्तु आपको मना कैसे करते, इसलिए इसके दूध की चाय बना दी । अब बच्चों को क्या पिलाओगे ! एक दिन दूध नहीं पिएगा तो मर नहीं जाएगा। इसके पापा बीमार है, वह शहर जाकर दूध ले आते पर उनको कल से बुखार है, आज अगर ठीक हो गए तो कल सुबह जाकर दूध ले आएंगे। वासुभाई उसकी बात सुनकर सन्न रह गये। इस महिला ने होटल न होते हुए भी अपने बच्चे के दूध से चाय बना दी और वह भी केवल इसलिए कि मैंने कहा था, अतिथि रुप में आकर ! ''**संस्कार और सभ्यता**'' में महिला मुझसे बहुत आगे है। उन्होंने कहा कि हम दोनों डॉक्टर है, आपके पति कहां हैं ? महिला उनको भीतर ले गई, अंदर गरीबी पसरी हुई थी। एक खटिया पर सज्जन सोए हुए थे, बहुत दुबले पतले थे । वासुभाई ने जाकर उनके माथे पर हाथ रखा, माथा और हाथ गर्म हो रहे थे और कांप भी रहे थे। वासुभाई वापस गाड़ी में गए, दवाई का अपना बैग लेकर आए, उनको दो-तीन टेबलेट निकालकर खिलाई और कहा- इन गोलियों से इनका रोग ठीक नहीं होगा। मैं पीछे शहर में जाकर इंजेक्शन और दवाई की बोतल ले आता हूं, वीणा बहन को उन्होंने मरीज के पास बैठने को कहा ! गाड़ी लेकर गए, आधे घंटे में शहर से बोतल, इंजेक्शन लेकर आए और साथ में दूध की थैलियां भी लेकर आये। मरीज को इंजेक्शन लगाया, बोतल चढ़ाई और जब तक बोतल लगी नहीं दोनों वहीं बैठे रहे। एक बार और तुलसी अदरक की चाय बनी दोनों ने चाय पी और उसकी तारीफ की। जब मरीज दो घंटे में थोड़ेठीक हुआ तब वह दोनों वहां से आगे बढ़े। तीन दिन इदौर-उज्जैन में रहकर जब लौटे तो उनके बच्चे के लिए बहुत सारे खिलौने और दूध की थैलियां लेकर आए वापस उस दुकान के सामने रुके। महिला को आवाज लगाई तो दोनों बाहर से निकले और उनको देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा कि- आपकी दवाई से दूसरे दिन ही बिल्कुल ठीक हो गये । वासुभाई ने बच्चे को खिलौने दिए, दूध के पैकेट दिए फिर से चाय बनी, बातचीत हुई, अपनापन स्थापित हुआ। वासुभाई ने अपना एड्रेस कार्ड देकर कहा- ''जब कभी उधर आना हो तो जरुर मिलना।

समाज में उजालें कम क्यों हो रहे हैं ?

स्वार्थ चेतना अनेक बुराईयों को आमंत्रण है। क्योंकि व्यक्ति सिर्फ व्यक्ति नहीं है, वह परिवार, समाज और देश के निजी दायित्वों से जुड़ा है। अपने लिए जीने का अर्थ है अपने सुख की तलाश और इसी सुख की तलाश ने अनेक समस्याएं पैदा की हैं। सामाजिक जीवन का एक आधारभूत सूत्र है सापेक्षता। निरपेक्ष व्यक्तियों का समूह भीड़ हो सकती है, समाज नहीं। जहां समाज होगा वहां सापेक्षता होगी और जहां सापेक्षता होगी वहां सहानुभूति, संवेदनशीलता और आत्मीयता होगी। किसी भी संस्था, समाज, देश या राष्ट्र की शक्ति एवं सफलता का आधार है सापेक्ष सहयोग, आपसी प्रतिबद्धताएं। जिस समाज से जुड़े हुए व्यक्ति समूह के हितों के दीयों में अपनी जिंदगी का तेल अर्पित करने की क्षमता रखते हों वही समाज संचेतन, प्रगतिशील, संवेदनशील और संजिदा होता है। स्वस्थ एवं उन्नत समाज वह है जिसमें सामाजिक चेतना एवं संवेदनाओं की अनुभूति प्रखर हो और उसकी क्रियान्विति के प्रति जागरुकता बरती जाती हो।

अनेक संगठनों ने सेवा, सहयोग एवं संवेदना की दृष्टि से एक स्वतंत्र पहचान बनाई है। स्वामिनारायण वाले हो या इस्कान वाले, कोई अणुव्रत का मिशन हो या सुखी परिवार अभियान इनकी विभिन्न संस्थाएं सेवामूलक जन कल्याणकारी प्रवृत्तियों से जन-जन को अभिप्रेरित कर रही है। रोग या बुढ़ापे की स्थिति में हमारा क्या होगा, इस चिंता से ये संस्थाएं और उनसे जुड़े लोग निश्चिंत करते हैं। वे पूरी जागरुकता से इस दायित्व को निभाते हैं। हमें भी सेवा का दर्शन अपनाते हुए अपने जीवन के साथ इसे जोड़ना है। इसे जोड़ने का अर्थ है कि हम खुद के लिए जीते हुए औरों के लिये भी जीने का प्रयत्न करें। व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर समूहगत भावना से जहां, जब, जो भी हो उसमें हिस्सेदारी बने। इस भावना के विकास का अर्थ होगा कि हमारी संवेदनशीलता जीवंत होगी। सड़क पर पड़े आदमी की सिसकन, भूखे-प्यासे-बीमार की आहें, बेरोजगार की बेबसी, अन्याय और शोषण से प्रताड़ित आदमी की पीड़ा ये सब स्थितियां हमारे मन में करुणा और संवेदना को जगाएगी और यह जागी हुई करुणा और संवेदना हमें सेवा और सहयोग के लिए तत्पर करेगी। इस तरह की भावना जब हर व्यक्ति में उत्पन्न होगी तो समाज उन्नत बनेगा, सुखी बनेगा और सुरक्षित बनेगा। न असुरक्षा की आशंका होगी, न अविश्वास, न हिंसा न संग्रह,न शत्रुता का भाव। एक तरह से सारे निषेधात्मक भावों को विराम मिलेगा और एक नया पथ प्रशस्त होगा। हम अपनी महत्वाकांक्षाओं से इतने बंध गए कि इस स्वार्थ में हमारी संवेदना भी खो गई। आज दूषित राजनीति में सिर्फ अपने को सुरक्षित रखने के सिवाय राजनेताओं का कोई चरित्र नहीं है। यही वजह है कि राष्ट्रीय समस्याओं, फैलती बुराईयों, अंधविश्वासों और अर्धशून्य परंपराओं के सामूहिक विरोध की ताकत निस्तेज पड़ती जा रही है फिर सेवा और सहयोग के आयाम कैसे पनपे ? जरुरत है दिशा बदलने की। परार्थ और परमार्थ चेतना जगाने की। दोनों हाथ एक साथ उठेंगे तो एकता, संगठन, सहयोग, समन्वय और सौहार्द की स्वीकृति होगी। कदम-से-कदम मिलाकर चलेंगे तो क्रांतिपथ का कारवां बनेगा। यही शक्ति है समाज में व्याप्त असंतुलन एवं अभाव को समाप्त करने की।

व्यक्ति प्रमाद या जड़ता से चरित्र भ्रष्ट हो सकता है, पुनरावर्तन के अभाव में पढ़ा हुआ, सीखा हुआ ज्ञान भी विस्मृत हो सकता है, किंतु सेवा कभी नष्ट नहीं होती। सेवाजनित लाभ कभी कहीं नहीं जाता। राजस्थानी कहावत है- ***''करें सेवा मिलें मेवा।''*** समाज स्तर पर सेवा के लाभ की मीमांसा करते हुए स्थानांग सूत्र के टीकाकार लिखते हैं-सेवा के व्यावहारिक लाभ है, शारीरिक या मानसिक दृष्टि से रुग्न वृद्ध व्यक्तियों के चित्त में समाधि पैदा करना,उन्हें भविष्य के प्रति आश्वस्त करना, ग्लानि का निवारण करना,वात्सल्य प्रकट करना,रोगी या वृद्ध को निःसहायता अनाथता का अनुभव न होने देना।

निशीय भाष्यकार लिखते हैं- समाज के सदस्यों की सेवा करने वाला धर्म-वृक्ष की सुरक्षा करता है। सबकी प्रियता प्राप्त करता है और महान निर्जरा,चित्त शुद्धि का भागी बनता है। मेरी दृष्टि में यही सच्ची धार्मिकता है। समाज में उजालों की जरुरत आज ज्यादा महसूस की जा रही है, क्योंकि वास्तविक उजाला जीवन को खूबसूरती प्रदान करता है, वस्तुओं को आकार देता है, शिल्प देता है, रौनक एवं रंगत प्रदान करता है।उजाला इंसान के भीतर ज्ञान का संचार करता है और अंधकार को खत्म कर जीवन को सही मार्ग दिखाता है। नकारात्मक दृष्टिकोण दूर कर सकारात्मक दृष्टि और सोच प्रदान करता है। खूली आंखों से सही-सही देख न पाएं तो समझना चाहिए कि वह अंधेरा बाहर नहीं, हमारे भीतर ही कहीं घुसपैठ किये बैठा है और इसीलिए हम अंधेरों का ही रोना रोते हैं। जबकि जीवन में उजालों की कमी नहीं है। श्रीमहावीर का त्याग, राम का राज वैभव छोड़ वनवासी बनना और गांधी का अहिंसक जीवन- ये उजालों के प्रतीक हैं जो भटकाव से बचाते रहे हैं।

महान आत्माओं ने सेवा की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दिया है। प्राचीनकाल में स्वार्थ कम तथा स्नेह व सौहार्द ज्यादा था। आज उसमें कमी आई है।इसका एक कारण है धन के प्रति आकर्षण और नकारात्मक चिंतन।जहां सकारात्मक चिंतन का विकास होता है वहां संबंधों में सौहार्द बढ़ता है। इसके लिये जरुरी है व्यक्ति अपने भीतर झांके। अंतदृष्टि को जागृत कर नया प्रकाश प्राप्त करें। अपेक्षा है कि समाज का हर अंग सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों के साथ जुड़कर उसी नये प्रकाश को प्राप्त कर सकते हैं, वह ईश्वरत्व का बीज है, स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का मार्ग है।

वात्सल्य का अनुबंध : रक्षा बन्धन

वात्सल्य सम्यग्दृष्टि का मणिमुकुट है। साधर्मी बंधुओं में प्रीति का अर्थ आत्मीयता की भावना का अभ्युदय। जीवन में प्रत्येक क्रिया में जागरुकता। कथनी और करनी में संतुलन मन में प्रतिपल सैकड़ें-हजारों उर्मियों को केन्द्रित कर इष्ट-अनिष्ट के निरन्तर कुलबुलाते केंचुओं को निकाल फेंककर वर्तमान में जीना। परहित कामना में अपनी अन्तर्दृष्टि को सजग रखते हुए प्राणीमात्र पर अपनी आस्था विकसित करना वात्सल्य की ही तो परिभाषाएं है। कमल की पाँखुरी पर पड़ी ओस की बूंद की भांति संसार में निर्लिप्त रहने वाले जीव आत्मवत् उनकी जीवन शैली से अभिन्नता से जुड़ जाती है। स्वार्थगंध दूर-दूर तक उनको स्पर्श नहीं कर पाती, परोपकार की गंगा तरंग इनका पद प्रक्षालन करती है। इनकी चेतना सदैव इन्हें स्वस्तिक पथ की ओर अग्रसर करती है। ये अतुल अन्तरंग निधि किसी पदावय की मुखापेक्षी नहीं होती। श्रमण हो या श्रावक, आराध्य हो या आराधक यह सूक्ष्म संवेदशील सूत्र कहीं भी किसी से भी आपको जोड़ तो सकता है, तोड़ नहीं सकता है। उनकी संवेदना की आत्म परिधि में पूरा विश्व होता है, सच है, आध्यात्म का यही सार है। यही पूर्ण जिनागम का सिन्धुमंथन है। आत्म शक्तियों का स्टोर है। यह भावना जब भी प्रकट होती है तब जग नई करवट लेता है, जागृति का भोर होता है और एक पर्व जन्म लेता है जिसमें बंधन होता है, निर्जला और निष्ठा का जिसमें समर्पण होता है अन्तरंग और बहिरंग का, जिसमें एकता होती है। समष्टि और व्यष्टि की। प्रतिवर्ष मनाये जाने वाला पर्व प्रतिपल सचेत और सचेष्ट रखता है, श्रद्धानिष्ठ बनाकर वात्सल्यानुपूरित करता है।

श्रमण धर्म के दो रुप आज के दिन प्रगट हुए- प्रथम सर्व समर्थ होते हुए भी शत्रु (विद्वेषियों) के प्रति क्षमा और समता रखना और अपनी शक्ति और तपस्या का अपनी रक्षा हेतु प्रयोग न करना। समता भाव से उपसर्ग सहन करना। द्वितीय सच्चे श्रमण तप का परीक्षण नहीं करते संत धर्म पर आये संकट की रक्षार्थ ही वे अपनी अद्भूत ऋद्धियों का उपयोग करते हैं। आत्मप्रभावना लोकषणा हेतु आइए हम प्रतिज्ञा करें देवशास्त्र गुरु के श्रद्धा सूत्र में बंधे रहेंगे और इनकी रक्षार्थ दृढ़ संकल्पित रहेंगे।

सुख:- *एक मेज पर सजे गुलदस्तों में से एक में तो लगे थे असली गुलाब और दूसरे में थे, नकली गुलाब अर्थात् कागज के फूल। असली फूलों ने आते ही दुःख प्रकट किया, तो नकली फूलों ने कहा- भाई, तुम सुन्दर भवन में आ गये हो फिर भी इतने दुःखी हो। इसका क्या कारण है ? असली गुलाब ने कहा मैं इसलिये दुःखी हूं कि मुझे इस सुन्दर भवन में रहने को थोड़े ही दिन का सौभाग्य मिला है। कल नहीं तो परसों मुझे यहां से कचरा समझकर हटा दिया जायेगा। प्रसन्न रहने का अधिकार तो आपको है, क्योंकि आपको शायद ही यहां से हटना पड़े।*

कागज के फूल ने कहा- नहीं भाई नहीं ''मेरा सारा जीवन तो कृत्रिमता को छिपाने में लगा है। धन्य है आप जो दो घंटे में इतना दे देते हैं जितना हम जीवन भर में नहीं दे पाते।'' असली फूल का चेहरा खिल उठा। उसे अपनी भूल का ज्ञान हुआ कि जिसे वह सुखी समझ रहा था उसका स्वयं का हृदय इतना विदम्भ है। सत्य है कि- ''सुख दुःख का कारण दृष्टिकोण है, बाध्य परिस्थितियाँ नहीं।

क्षमा भाव समता बिना धर्म क्रिया बेकार।
क्षमा भाव ही जानिये जैन धर्म का सार॥

चण्डकौशिक ने सुन प्रभु वीर का पैगाम।
क्षमाभाव को धारण कर पाया मोक्ष धाम॥

सवंत्सरी की शुभ घड़ी में बरसे धर्म का नीर।
अज्ञानी प्यासा मरे यह उसकी तकदीर॥

क्षमाभाव से पहचानिये निर्मल आत्म स्वरुप।
क्षमाभाव हृदय उतारिये जैसे उदयन महीप॥

अपने माता-पिता का सम्मान करने के 35 तरीके

✽ रमण पाटनी, मल्कापुर

1- उनकी उपस्थिति में अपने फोन को दूर रखो।
2- वे क्या कह रहे हैं इस पर ध्यान दो।
3- उनकी राय स्वीकारें।
4- उनकी बातचीत में सम्मिलित हों।
5- उन्हें सम्मान के साथ देखें।
6- हमेशा उनकी प्रशंसा करें।
7- उनको अच्छा समाचार जरुर बतायें।
8- उनके साथ बुरा समाचार साझा करने से बचें।
9- उनके दोस्तों और प्रियजनों से अच्छी तरह से बोलें।
10-उनके द्वारा किये गये अच्छे काम सदैव याद रखें।
11-वे यदि एक ही कहानी दोहरायें तो भी सुनें जैसे पहली बार सुन रहे हो।
12-अतीत की दर्दनाक यादों को मत दोहरायें।
13-उनकी उपस्थिति में कानाफूसी न करें।
14-उनके साथ तमीज से बैठें।
15-उनके विचारों को न तो घटिया बताये न ही उनकी आलोचना करें।
16-उनकी बात काटने से बचें।
17-उनकी उम्र का सम्मान करें।
18-उनके आसपास उनके पोते-पोतियों को अनुशासित करने अथवा मारने से बचें।
19-उनकी सलाह और निर्देश स्वीकारें।
20-उनका नेतृत्व स्वीकार करें।
21-उनके साथ उँची आवाज में बात न करें।
22-उनके आगे अथवा सामने से न चलें।
23-उनसे पहले खाने से बचें।
24-उन्हें घूरे नहीं।
25-उन्हें तब भी गौरवान्वित प्रतीत करायें जबकि वे अपने को इसके लायक न समझें।
26-उनके सामने अपने पैर करके या उनकी ओर अपनी पीठ कर के बैठने से बचें।
27-न तो उनकी बुराई करें और न ही किसी अन्य द्वारा की गई उनकी बुराई का वर्णन करें।
28-उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करें।
29-उनकी उपस्थिति में उबने या अपनी थकान का प्रदर्शन न करें।
30-उनकी गलतियों अथवा अनभिजता पर हंसने से बचें।
31-कहने से पहले उनके काम करें।
32-नियमित रुप से उनके पास जायें।
33-उनके साथ वार्तालाप में अपने शब्दों को ध्यान से चुनें।
34-उन्हें उसी सम्बोधन से सम्मानित करें जो वे पसन्द करते हैं।
35-अपने किसी भी विषय की अपेक्षा उन्हें प्राथमिकता दें।

''माता-पिता इस दुनिया में सबसे बड़ा खजाना है, यह मेसेज हर घर तक पहुंचने में मदद करें तो बड़ी कृपा होगी, मानव जाति का उद्धार संभव है, यदि ऊपर लिखी बातों को जीवन में उतार लिया तो सबसे पहले भगवान, गुरु माता पिता ही है, हर धर्म में इस बात का उल्लेख है।''

आप सभी के माता-पिता को सादर नमन...! जय जिनेन्द्र !

कल्पवृक्ष है यह पर्व चिंतित को है फ्ल है सतार।
पर्युषण भवोभव के रोग का है पक्का उपचार॥
सुस्वागत है पर्व वट का आत्म जगत सम्राट।
दिखला रहा संसार को अपना रुप विराट॥

सफलता का सूत्र : धैर्य

प्रत्येक व्यक्ति सुगति चाहता है। सुगति, प्रगति व्यक्ति के आचरण पर निर्भर करती है। जीवन को स्वस्थ और आचरण को उन्नत बनाने के लिये तत्वदर्शन को जानना जरुरी है। अकर्मवाद की जीवन-शैली व्यक्ति को निठल्ला बना देती है। भगवान श्रीमहावीर ने पुरुषार्थवाद को अधिक महत्व दिया। भाग्य का योग भी होता है, पर किसी को एकान्त मानकर चलनेवाला कुछ नहीं कर सकता। पुरुषार्थवादी धारणा के आधार पर चलनेवाला जैसी चाहे, वैसी सफलता प्राप्त कर सकता है।

जीवन में सफल होने के लिये धैर्यवान होना बहुत जरुरी है। धैर्य जीवन-शैली का अनिवार्य अंग है। टालस्टाय के शब्दों में- चलनी में पानी है, जब तक वह बर्फ न बन जाय, तब तक धैर्य को खंडित नहीं होने दो। यही सफलता का सूत्र है।

श्रावक के 14 नियम जो हमें रोज लेने चाहिये....

1- सचित्तः- सचित्त अर्थात् जिस पदार्थ में जीव राशि है। इसमें सचित पदार्थों के सेवन की दैनिक मर्यादा रखी जाती है। जैसे कच्ची हरी सब्जी, कच्चे फल, नमक, कच्चा पानी, कच्चा पूरा धान आदि का संपूर्ण त्याग अथवा इतनी संख्या से अधिक उपयोग नहीं करुंगा ऐसा नियम करना। (3, 5, 7 आदि)

2- द्रव्यः- खाने-पीने की वस्तु/द्रव्य की प्रतिदिन मर्यादा रखनी है, इसमें पदार्थों की संख्या का निश्चय किया जाता है। भिन्न-भिन्न नाम व स्वाद वाली वस्तुएं इतनी संख्या से अधिक खाने के काम में नहीं लूंगा। जैसे- खिचड़ी रोटी, दाल, शाक, मिठाई, पापड़, चावल आदि की मर्यादा करना। (11, 15, 21 आदि)

3- विगईः- अभक्ष्य विगई, मांस, शहद, मक्खन इनका सर्वथा त्याग होना ही चाहिये। भक्ष्य विगईः- प्रतिदिन तेल, घी, दूध, दही, शक्कर/गुड़ तथा घी या तेल में तली हुई वस्तु ये छः विगई है। इनका यथाशक्ति त्याग करना या रोज कम से कम 1 विगई त्याग करना।

4- उपानहः- जूता, मोजा, चप्पल आदि पाँव में पहनने की चीजों की मर्यादा रखें। (3, 5, 7 आदि)

5- तम्बोलः- मुखवास के योग्य पदार्थो, पान, सुपारी, खटाई, इलायची आदि का त्याग करना या दैनिक के लिए परिमाण रखना। (3, 5, 7 आदि)

6- वत्थः- पहनने, ओढ़ने के वस्त्रों की दैनिक मर्यादा रखना। (5, 10, 15, 20 आदि) आज मैं.... संख्या में वस्त्रों को अपने शरीर पर ध्यान करुंगा, इससे अधिक वस्त्रों को नहीं पहनूंगा।

7- कुसुमः- पुष्प, तेल, इत्र, अगरबत्ती आदि सुगंधित पदार्थों का दैनिक मर्यादा रखना। (3, 5, 7 आदि)

8- वाहनः- रिक्शा, स्कूटर, कार, बस, ट्रेन आदि का दैनिक उपयोग या मर्यादा करें। (3, 5, 7 आदि)

9- शयनः- शय्या, आसन, कुर्सी, बिछोना, पलंग आदि का प्रमाण करना। (5, 10, 15 आदि)

10-विलेपनः- केसर, चन्दन, उबटन, तेल, क्रीम, पाउडर आदि का प्रमाण करें। (3, 5, 7 आदि)

11- ब्रह्मचर्यः- परस्त्री का सर्वथा त्याग, स्वस्त्री के साथ मर्यादा का संकल्प करें।

12- दिशाः- दस दिशाओं में अथवा एक दिशा में इतने कि.मी. से अधिक दूर जाने की सीमा निश्चित करना। (50 या 100 किलोमीटर)

13- स्नानः- श्रावक प्रतिदिन स्नान, हाथ पैर धोने की, जल की मर्यादा संख्या की मर्यादा रखना। (1 या 2 स्नान, 2 बाल्टी पानी से अधिक का त्याग)

14- भत्त नियमः- प्रतिदिन अन्न पानी आदि चारों आहारों का तोल रखना। (रात्रि भोजन का त्याग, दिन में 2, 3 बार आदि)

स्थायी सुख का आधार : सत्य

सत्य से ही धर्म का जन्म होता है। जो व्यक्ति सत्य को स्वीकार कर लेता है, सत्य पर जिसका जीवन प्रतिष्ठित हो जाता है, वह नर मिटकर नारायण बन जाता है। सत्य की उपासना वस्तुतः भगवान की उपासना है। इसीलिये आचरांग सूत्र में भगवान महावीर ने कहा- ''सच्चं खलु भगवयं'' -सत्य ही भगवान है। सत्य एक ऐसी परम शक्ति है, जो व्यक्ति को परमात्मा तक पहुंचा देती है। सत्य की उपासना करनेवाला व्यक्ति स्वयं मिटकर समष्टि बन जाता है। बहुत ही प्रचण्ड ताकत है सत्य में, परन्तु उसे व्यावहारिक जगत में उतारने की हम कोशिश नहीं करते। असत्य के माध्यम से हम उपार्जन कर लेते हैं। असत्य का वर्तमान बड़ा सुन्दर होता है, किन्तु हम कभी उसके भावी दुष्परिणामों पर विचार नहीं करते। असत्य के फलस्वरुप आनेवाले दुःखों और भयानक परिणामों को न समझना ही हमारा दुर्भाग्य है। असत्य के द्वारा प्राप्ति सहज में हो सकती है, मगर उसका वियोग कष्टप्रद और दर्दनाक होता है। सत्य का वर्तमान भले ही कठोर हो, मगर उसका भविष्य बहुत ही उज्जवल और सुन्दर होगा।

जीवन दीप : नाम सार्थकता का प्रतीक है

''जीयो और जीने दो'' श्री वीर प्रभु के सिद्धांत का आव्हान करती जीवन दीप संस्था ने एक साथ सफलता की छलांग नहीं लगाई बल्कि इंच दर इंच आगे बढ़कर मानव जीवन के दुःखों के पल को दूर कर अपने सेवा कार्यों के द्वारा एक विशिष्ट पहचान उज्जैन में बनाई है। संस्था की मानव सेवा कार्यों की लोकप्रियता इस बात की द्योतक है कि किसी भी संस्था का विकास कार्यों से होता है सिर्फ नाम से नहीं होता है। जीवन दीप ने अल्प समय में अपने नाम को सार्थकता प्रदान करते हुए शारीरिक व्याधियों से पीड़ित मानवीय जीवन में आशा का संचार किया है। जीवन दीप की अपने उदयकाल से (2014) कठोर संकल्प से कुछ करना है कि भावना ने ऊंचाईयों पर पहुंचाया है। श्री महेन्द्रजी नाहर का शांत स्वभाव और परिवार का सम्पूर्ण सम्पूर्ण सहयोग सफलता का कारण बना है।

असहाय शारीरिक व्याधि से परेशान लोगों को चाहे वह किसी जाति समुदाय का हो बगैर भेदभाव से उनका ईलाज और जाँच करवाना जीवन दीप उद्देश्य रहा है, यही कारण है कि धीरे-धीरे संस्था के सेवा कार्यों में हाथ बढ़ानेवाले समर्पित कार्यकर्ता और सद्‌वय करने वाले परोपकारियों का योगदान बढ़ने लगा। वैसे तो सन् 2010 से अपनी धर्मपत्नी की प्रेरणा से श्री महेन्द्रजी ने शांति मेडिकल उपकरण सेवा केन्द्र का शुभारंभ कर दिया था। मानव कल्याण और समाज सेवा का यह प्रकल्प आज भी गतिमान है। शहर में ऐसे सभी तबके लोग है जिन्हें परिवार के किसी व्यक्ति के अस्वास्थ हो जाने पर परिवार की आर्थिक चिंता बढ़ जाती है। ऐसे सभी लोगों के लिये दवाई का वितरण कार्य जीवन दीप के द्वारा किया जा रहा है। आज बड़ी संख्या में सभी समाज के सेवाभावी निष्ठावन श्रेष्ठी संस्था से जुड़कर मानव सेवा में सहयोग दे रहे हैं। शारीरिक रुप से अशक्त बीमार व्यक्ति को अनेक स्वास्थ्य संबंधी जांच अत्यन्त अल्प व्यय में प्रदान की जा रही है। किसी भी संस्था की ख्याति उसके नाम से नहीं काम से होती है। जीवन दीप के सेवाभावी कार्यों की पहचान अब नगर की सीमा के बाहर देश स्तर पर बनने लगी है, यही कारण है कि स्वास्थ्य सेवा का दायरा बढ़ाने के लिये दानदाता आगे आकर संस्था के हित में दान दे रहे हैं, इसी का परिणाम है कि अब जीवन दीप जैन डायग्नोस्टिक सेंटर का निर्माण होने जा रहा है, शीघ्र ही आर्थिक रुप से कमजोर लोगों का स्वास्थ्य सेवा की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति यहां हो सकेगी। भूमिदाता और दानदाताओं का अपूर्व सहयोग इस कार्य में मिल रहा है। जीवन दीप को अपनी स्वास्थ्य सेवाओं को परिवार तक पहुंचाने में महिला शक्ति का भी अभूतपूर्व सहयोग मिल रहा है। जीवन दीप के द्वारा किये जा रहे स्वास्थ्य संबंधी कार्य सच्ची मानव सेवा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, भविष्य में जीवन दीपक के कार्य **''स्वास्थ्य क्रांति''** के रुप में समाज में जाने जायेंगे। गुरु भगवंतों से आर्शीवाद प्राप्त करने से जीवन दीप को आत्मबल मिला है। अनेक साधु-साध्वी भगवंतों के स्वास्थ्य को लेकर संस्था का अपूर्ण सहयोग रहा है। यही कारण है कि जीवन दीप को आध्यात्मिक चिकित्सा का सहयोगी भी कहा जा सकता है। जीवन दीप में अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्या का समाधान पाकर मरीजों का आत्मबल बढ़ जाता है, कारण यह है कि वह कोई व्यावसायिक संस्था नहीं बल्कि सच्चे रुप में मानवीय के जीवन को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने का आत्मीय प्रबंध है। मानव सेवा के स्वास्थ्य के सभी प्रकल्पों में जीवन दीप आगे बढ़े इसी भावना के साथ !

- डॉ. सुभाष जैन

पांच नमस्कार

1- प्रहास नमस्कार- मजाक से अथवा ईर्ष्या से नमस्कार करना।

2- विनय नमस्कार- माता-पिता आदि को विनय से नमन करना।

3- प्रेम नमस्कार- मित्रों आदि को प्रेम से नमन करना।

4- प्रभु नमस्कार- सत्ता आदि के कारण राजा को नमन करना।

5- मोक्ष के लिए देव-गुरु आदि को नमन करना।

आत्मा को शुद्ध करनेवाला महापर्व

पर्युषण महापर्व मात्र जैनों का पर्व नहीं है, यह एक सार्वभौम पर्व है। पूरे विश्व के लिये यह एक उत्तम और उत्कृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना की जाती है।

संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिससे आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है।

प्रत्येक वर्ष भाद्र शुक्ल चतुर्थी तिथि को जैन धर्म के श्वेतांबर मत को मानने वाले इस पर्व का समापन क्षमा दिवस के रुप में करते है जबकि इसी दिन दिगम्बर मत को मानने वाले इस पर्व की शुरुआत करते हैं।

आठ दिनों तक चलने वाले इस पर्व को अंतिम दिन को मैत्री दिवस कहा जाता है जिसमें जैन मत को मानने वाले साल भर में जाने-अनजाने हुए गलतियों की क्षमा मांगते हैं।

पर्युषण पर्व अंर्तआत्मा की आराधना का पर्व माना जाता है। यह आत्मशोधन का पर्व है, निंद्रा त्यागने का पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व एक ऐसा सवेरा है जो निंद्रा से उठाकर जागृत अवस्था में ले जाता है। अज्ञानरुपी अंधकार से ज्ञानरुपी प्रकाश की ओर ले जाता है। तो जरुरी है प्रमादरुपी नींद को हटाकर इन आठ दिनों विशेष तप, जप, स्वाध्याय की आराधना करते हुए अपने आपको सुवासित करते हुए अंर्तआत्मा में लीन हो जाए जिससे हमारा जीवन सार्थक व सफल हो पाएगा।

पर्युषण महापर्व आध्यात्मिक पर्व है, इसका जो केन्द्रीय तत्व है, वह है- आत्मा। आत्मा के निरामय, ज्योतिर्मय स्वरुप को प्रकट करने में पर्युषण महापर्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्यात्म यानि आत्मा की सन्निकटता। यह पर्व मानव-मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है।

उन लोगों के लिये पर्युषण पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक जीवन शैली का प्रयोग है। आज भौतिकता की चकाचौंध में, भागती जिंदगी की अंधी दौड़में इस पर्व की प्रासंगिकता बनाये रखना ज्यादा जरुरी है।

आया है भव जीवन तारने पर्युषण जलपान।
हे आत्मन् चुक न जाना आगम का आवहात्॥

मैत्री की पराकाष्ठा

गीता में लिखा है कि जिसको देखकर दूसरों को उद्वेग नहीं होता और जो दूसरों को देखकर उद्वेग नहीं करता वही वास्तव में स्थितप्रज्ञ साधक है। ऐसा कब हो सकता है ? हृदय मैत्री भाव से भर जाय तब !

मैत्री की पराकाष्ठा आती है तब साधक शांत-प्रशांत उपशांत बनता है। उसके चेहरे पर हृदय में रही हुई मैत्री की चमक दिखाई देती है। उनकी आंखों में जीवों के प्रति करुणा दृष्टिगोचर होती है, साधक स्वयं शांत होता है, इतना ही नहीं, उसके पास आनेवाले व्यक्ति को भी परम शांति का अनुभव होता है। सरोवर के पास कोई भी व्यक्ति जाता है तो उसे ठंडक का अनुभव होता है, उसी तरह ऐसे साधक के पास जाने मात्र से ही व्यक्ति को परम प्रशांतवाहिता का अनुभव होता है, क्रोधी व्यक्ति भी प्रशांत बन जाता है। आदमी की बात जाने दो, ऐसे उत्कृष्ट साधक के पास बाघ, सिंह और भेडिये जैसे हिंसक प्राणी भी शांत बन जाते हैं।

गिरनार के पास अभी एक घटना हुई। गिरनार के जंगल में एक साधक साधना करता था। एक वक्त बाघिन अपने बच्चों के साथ वहां पहुंची। बाघिन की आंख के साथ साधक की आंख मिली। साधक तो मैत्रीभाव से रंगा हुआ था। संपूर्ण स्वस्थ था। जहां आंखों मिली वहां ही मैत्री का झरना पैदा हुआ। बाघिन कुछ भी किये बिना चली गई। सामान्यतः बाघ का जाति स्वभाव होता है पेट भरा हुआ हो या खाली, कोई भी मिले तो उसे अवश्य मार डाले। लेकिन लगता है कि यहां तो स्वभाव भी बदल गया !

बलदेव मुनि के पास सांप, सिंह, बाघ, आदि शांत बनकर काउस्सग्ग करते थे- ऐसी शास्त्र की बात सिर्फ बातें ही नहीं है, हकीकत है, ऐसी घटना से यह स्पष्ट मालूम पड़ता है।

''अहिंसाप्रतिष्ठायातत्सन्निधी वैरत्यागः'' अहिंसा-मैत्री की हृदय में प्रतिष्ठा होते ही पास आनेवाले प्राणी वैर भावना से मुक्त बनते है'' पतंजलि की यह बात कितनी सुंदर है ?

मैं सुभग

मैं भेड़-बकरी चरानेवाला आहीर का पुत्र सुभग ! यद्यपि सुभग कहोगे तो मुझे कोई नहीं पहचानेगा, लेकिन ''सोभो'' कहो तो सभी पहचानेंगे। धनरहित हम अहीरों को ''सुभग'' कौन कहेगा ? भले.... कोई नहीं कहता हो। फिर भी एक बार मैं सचमुच ''सुभग'' (भाग्यशाली) बन गया था।

बात ऐसी थी कि मैं जंगल में भेड़-बकरी चरा रहा था वहीं मेरी नजर एक जैन मुनि पर पड़ी। घने वृक्ष के नीचे वे मुनि शांत-प्रशांत मुद्रा में खड़ेथे। उनकी तरफ स्वाभाविक ही मैं आकर्षित हुआ। मैं उनके पास गया। हाथ जोड़कर प्रणाम किये, लेकिन यह क्या ? मुनिवर तो ''नमो अरिहंताणं'' बोलकर आकाश में उड़गये। कायोत्सर्ग पारने के समय ''नमो अरिहंताणं'' बोलने की विधि होती है। किन्तु मैं समझा कि ''नमो अरिहंताणं'' कोई आकाश में उड़ने का मंत्र है। मुझे मंत्र में तब अति श्रद्धा थी। आकाश में उड़ने के स्वप्न मैं देखता। पक्षी की तरह मुझे भी पंख मिल जाये तो मैं भी नीलगगन में उडूं। रे ! मानव से तो पक्षी अच्छे, कैसे निर्भय होकर आकाश में उड़ते है ! काश ! मुझे भी पंख मिल जाये, कोई मंत्र मिल जाये ! कोई विमान मिल जाये ! आज अब मुझे मेरा मनोरथ सिद्ध होते लगा। आकाश में उड़ने का मंत्र मिल गया। मैं रात-दिन उसे जपने लगा। एक दिन मेरे सेठ ने यह सुना। उन्होंने पूछा- ''अरे ! सोभा ! तू यह क्या कर रहा है ?''

''आकाश में उड़ने का मंत्र गिन रहा हूं''। मैंने सहज भाव से जवाब दिया। अरे ! इससे सिर्फ आकाश में ही नहीं, परन्तु चौदह राजलोक के शिखर पर रही हुई सिद्धशिला में भी जा सकते हैं। मेरे पास आ। मैं तुझे पूरा मंत्र देता हूं.... और मैंने सेठजी से पूरा मंत्र सीखा और रात-दिन गिनने लगा।

एक दिन मैं जंगल में गया हुआ था तब मूसलधार बरसात हुई। गांव की ओर लौटा तब नदी के पास मैं अटक गया। क्योंकि नदी में भयंकर बाढ़ आई थी। क्षणभर मैं खड़ा रह गया। मैंने सोचा- अरे.... अब मैं नदी के बाढ़ से क्यों घबराऊं ? मेरे पास तो आकाश में उड़ने का मंत्र है। आकाश में उड़ सकते तो नदी से क्या डरना ? मैं ऊंचे करारे पर चढ़ा और वहां से जोर से ''नमो अरिहंताणं'' बोलकर

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

नदी में कूद पड़ा।

आकाश में उड़ने के बदले मैं तो नदी में ही पड़ा। गहरे खड्डे में फस गया। एक तीक्ष्ण धारवाला लकड़ा मेरे पेट में घुस गया.... मेरे प्राण तीव्र वेदना के साथ तड़फने लगे। फिर भी ''नमो अरिहंताणं'' का जाप मैंने छोड़ा नहीं। अरेर ! कहां मेरे भोग लगे कि इस जाप की बला में मैं फस गया ? उड़ने गया आकाश में किन्तु गिर गया पानी में। अधूरे में पूरा लकड़े से बेधा गया। इस मंत्र ने तो मुझे ठग दिया। मुझे मार डाला। ऐसा कुछ भी विचार मुझे नहीं आया। मैं तो परम श्रद्धा से यह जाप ऐसी वेदना में भी जपता ही रहा। नवकार मंत्र के प्रभाव से मैं मरकर सुदर्शन सेठ बना। निष्कलंक शील के स्वामी सुदर्शन सेठ को कौन नहीं पहचानता ?

बंधुओ ! अर्थ न जानने पर भी नवकार के जाप की कितनी ताकत है वह देखा न ? आप भी हर रोज नवकार की एक माला गिनना हों...!मेरी तरह आपका भी काम हो जायेगा।

एक वृक्ष पर उल्लू बैठा था, उसी पर आकर एक हंस भी बैठ गया और स्वाभाविक रुप से बोला- आज सूर्य प्रचंड रुप में चमक रहे हैं, इससे गर्मी तीव्र हो गई है। उल्लू ने कहा- सूर्य कहां है?गर्मी तो अंधकार बढ़ने से होती है,जो इस समय भी हो रही है। उल्लू की आवाज सुनकर एक बड़े वटवृक्ष पर बैठे अनेक उल्लू वहां आकर हंस को मूर्ख बताने लगे और सूर्य के अस्तित्व को स्वीकार न कर हंस पर झपटे। हंस अपने प्राण बचाकर भाग खड़ा हुआ।

महर्षि पैंगल पक्षियों की भाषा जानते थे। वे त्रिकालदर्शी भी थे। उन्होंने अपने शिष्यों को यह घटना बताते हुए कहा- आज की परिस्थितियों में जो धार्मिक परंपराएं डाली जा रही है, वे कलियुग तक पहुंचते-पहुंचते आडंबर बन जाएगी और बहु संख्यक समाज जीर्ण परंपराओं को गले लगाए रहेगा। विवेकवानों की स्थिति इस हंस जैसी ही होगी। शिष्यों ने पूछा- तात ! तब फिर धार्मिक परंपराओं का पुनर्जीवन कैसे होगा ? पैंगल बोले- उसे कोई महाप्रज्ञा शक्ति ही स्थापित करेगी। उस समय वह राजहंस अपने हंस समुदाय के साथ इन उल्लुओं को मार भगाएगा और विवेक को स्थापित करेगा।

मधुर संबंधों को व्यापार मत बनाओ

गिरी कन्दराओ में निर्वस्त्र निवास करने वाला, पशुओं का कच्चा गोश्त खाकर जीने वाला आदि मानव आज सभ्यता के शिखर पर पहुंच गया है। आलीशान बंगला, गाड़ी, मोबाईल, कम्प्यूटर आदि सुविधाओं से सज्जित मानव अपनी उपलब्धियों पर गर्व से इठलाता फिरता है। पाने और अधिक पाने की बेतहाशा दौड़ में वह इतना व्यस्त है कि एक पल को भी अपने अंतर्मन में झांकने का समय नहीं निकाल पाता। काश, वह कुछ समय अपने जीवन के मूल्यांकन के लिए भी निकाल पाता तो शायद वह महसूस कर पाता कि उसका जीवन आपसी रिश्तों, भावनाओं अथवा आत्मीयता का एक मधुर सागर न रहकर ''व्यापारिक-मनोवृत्ति'' का शुष्क स्रोत बन गया है जिसमें रिश्तों की मिठास के निर्मल जल के स्थान पर **''स्वार्थ और लोभ''** की पथरीली-रेतीली धारा बहती है।

भौतिकवादी संस्कृति की आपाधापी के चलते ऐसा लगता है कि मानो हमारा पूरा समाज ही एक बनिए की दुकान में तब्दील हो गया है, जहां स्नेह, संबंध, भावना आदि चीजें बिकने के लिए रखी है। उन्हें पाने के लिये हमें उनकी कीमत देनी होगी और वह कीमत हमारी आध्यात्मिक संस्कृति वाले ''निस्वार्थ-स्नेह'' या ''भावना'' की नहीं बल्कि ''अर्थ'' व ''बल'' की है। यदि धन-दौलत व ताकत (पद-प्रतिष्ठा की) है तो इनमें से कोई भी चीज अप्राप्य नहीं, अन्यथा तो इनकी कल्पना भी वैसी लगती है जैसे कोई भिखारी फुटपाथ पर बैठा अपने सामने की दुकान के शोकेस में सजी चीजों को देखता है।

वर्तमान की यह कैसी विडम्बना है कि पिता-पुत्र से सुख चाहता है, पुत्र-पिता से, पति-पत्नी से आनंद चाहता है तथा पत्नी-पति से, गुरु-शिष्य से प्रतिदान चाहता है और शिष्य गुरु से, यानि हर व्यक्ति अपनी झोली दूसरे की झोली से लेकर ही भरना चाहता है। जबकि यदि वह अपनी झोली से देकर दूसरे की झोली भरने की इच्छा रखे तो निश्चय ही दोनों की झोली भर जाएगी। संत तुकाराम ने कहा था कि - ''जीवन को दूसरों की आशा के सहारे नहीं काटा जा सकता, वह तो मनुष्य को हर हाल में खुद अपने ही बलबूते पर पूरा करना होता है। यह स्वयं उसी पर निर्भर करता है कि वह अपना जीवन अपने भरोसे आनंदपूर्वक बिताए या दूसरों का मुंह ताकतें हुए अपेक्षित या बोझिल रुप में जिए।'' परन्तु इस सत्य को नकार कर आज मनुष्य रिश्तों के एक तरफा बोझ से दबा जा रहा है। एक तरफ जहां किसी रिश्ते की मजबूरी से कोई स्वयं बोझिल है परन्तु दूसरी ओर स्वयं किसी ऐसे ही रिश्ते पर बोझ बना बैठा है। जो व्यक्ति खुद अपने दामाद की मांगों से दुःखी है, वहीं अपने बेटे के ससुर का खून चुस रहा है।

आपसी संबंधों के इस विकृत रुप के कारण ही आज समाज के हर स्तर पर हिंसा का बोलबाला है। जब नितांत आत्मीय संबंध भी अर्थ व स्वार्थ से जुड़ गए हैं तो फिर किसी पराए से कोई आत्मीय संबंध व निस्वार्थ रिश्ता होगा यह सोच पाना भी असंभव है। जहां दौलत के लिए खून से जुड़े रिश्ते भी हिंसा की चरम सीमा तक पहुंच सकते हो वहां किसी परायी बेटी (बहू) को शोलों में धकेलते अथवा किसी गैर की गर्दन पर छुरी चलाते समय आत्मा का स्पंदन किसी के मस्तिष्क की क्रिया को प्रभावित कर पाएगा यह नामुमकिन है।

ऐसी बात नहीं है कि ऐसी प्रवृत्ति से मानव बहुत खुश है। हर व्यक्ति ऐसे संबंधों से दुःखी और आहत है, अपने जीवन की रिक्वता से व्याकुल है, परन्तु फिर भी वह दूसरे के जीवन में यही सब भर देने के लिये तत्पर है। हर वस्तु अस्थाई है, नश्वर है तथा हर प्रकार का बाहरी सुख आत्मीय संबंधों के आलौकिक सुख के समक्ष तुच्छ है, यह सब जानते हुए भी मनुष्य अनजान की तरह गंगाजल से शीतल, पवित्र स्नेह रुपी जल को नष्ट कर सिर्फ अर्थ-लोलुप, स्वार्थी संबंधों के गंदले पानी से अपनी पिपासा शांत करने में श्रमरत है।

यह कहना बिल्कुल बेमानी है या यूं कहें कि- अपनी सुविधा के लिये बनाया गया एक खूबसूरत बहाना है कि ''क्या करें आजकल समय ही ऐसा है हम कुछ कर ही नहीं सकते, क्योंकि पूरा सामाजिक ढांचा ही ऐसा हो गया है कि आदमी-आदमी का रिश्ता सिर्फ मतलब का रह गया है।'' ऐसी मजबूर और बेबस कोई जड़ वस्तु तो हो सकती है परन्तु मनुष्य जैसा गतिमान व चेतन मस्तिष्क कभी नहीं हो सकता। मुंशी प्रेमचंद ने कहा था- **''धारा की दिशा में तो मुर्दे बहते है, जीवित तो हाथ-पांव मार कर अपना किनारा पाने का प्रयास करते हैं।**

यदि हम प्रतीक्षा करें कि समाज अपनी दिशा बदलेगा तो हम भी बदल जाएंगे तो यह सोचना होगा कि यह समाज है

कौन ? हर मनुष्य ही तो उसकी इकाई है। मानव व पशु समाज में कुछ तो फर्क होना चाहिये। पशु के पास गतिमान शरीर तो है पर विकसित मस्तिष्क नहीं है, उनमें एक पशु को किसी राह पर चलते देख उसके पीछे पूरा झूंड चल देता है, परन्तु मनुष्य तो ऐसा नहीं है। फिर क्यों आज समूह का समूह संबंधों की व्यावसायिकता के रास्ते पर बढ़ता हुआ अपने जीवन को नीरस, वीरान एवं संकुचित करता जा रहा है। वह अपने व्यक्तिगत स्तर पर यह निश्चत क्यों नहीं कर पाता कि ''चाहे जो हो मैं इस भौतिकवादी परंपरा की वेदी पर अपने निजी-संबंधों की मधुरता की आहुति हरगिज नहीं दूंगा।''

यदि जरा भी बौद्धिक चिंतन रखनेवाला व्यक्ति बार-बार समाज के स्वार्थी संबंध रुपी हथौड़ें की चोट से आहत होकर खुद यह निश्चय कर ले कि ''भले ही मेरा मन, मेरी आत्मा रिश्तों की इस शुष्क गर्म-धारा से जल कर राख हो जाए फिर भी बदले में मैं अपने संपर्क में आने वाले किसी मित्र, संबंधी या जानकार को ऐसी चोंट नहीं पहुंचाऊंगा। मेरा संबंध जिस किसी से भी होगा वह भावनात्मक जुड़ाव के शीतल जल का प्रवाह ही होगा'' तो निश्चय ही समाज में परिवर्तन होगा। इसके लिये मनुष्य को बहुत कष्ट सहन करना पड़ सकता है, बहुत कुछ आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ सकता है परन्तु अन्ततः उसके निस्वार्थ स्नेह को स्वीकार कर उसके प्रति भी वैसा ही निस्वार्थ स्नेह रखनेवालों की एक जमात इकट्ठी हो जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं परन्तु अपने स्तर पर इंसान प्रयास तो करें। कष्ट व त्याग तो कहां नहीं करना पड़ता ? क्या वर्तमान स्वार्थी व व्यावसायिक हो गए संबंधों से मनुष्य को कष्ट नहीं होता ? क्या इन्हें भी कायम रखने के लिए उसे बहुत कुछ त्याग नहीं करना पड़ता ? जब एक नीरस व बनावटी संबंध बनाए रखने के लिए इंसान तन, मन व धन से कष्ट उठा सकता है तो फिर एक मधुर व आत्मीय संबंध के लिये वह क्यों नहीं वैसा करता जिसका कुछ लाभ तो है।

जैसे गाय अपने बछड़े से निस्वार्थ स्नेह करती है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने आश्रित किसी भी व्यक्ति से बिना किसी प्रतिफल की आशा के प्यार करना चाहिये। मनुष्य के विचार व भावनाओं के अनुरुप ही उसका जीवन बन जाता है। अतः मनुष्य यदि कोई अन्य प्रयास न करके सिर्फ अपने विचार और भावनाएं शुद्ध और परमार्थकारी बना ले तो भी जीवन में खुद-ब-खुद परिवर्तन आ जाएगा।

किसी कंटकाकीर्ण मार्ग को साफ करने के लिये सफाईकर्त्ता को सर्वप्रथम अपने पैरों के नीचे से कांटे हटाने शुरु करने पड़ते है, ऐसे ही रिश्तों के इस भयानक बियावान को हरा-भरा करने के लिए सर्वप्रथम हमें अपने समीपस्थ स्थान में कोमल घास उगानी होगी, जिन पर चलकर समाज के सूखे जंगल को साफ किया जा सके। ताकि स्नेह की हरियाली हो पाए। यह निकटस्थ स्थान है ''हमारा अपना घर'' जिसमें यदि बच्चे के जन्म से ही निस्वार्थ परवरिश शुरु होकर, माँ-बाप की वृद्धावस्था को अपना सौभाग्य मान कर उनकी देखभाल हो तो फिर समाज में कहां रह जाएगा कोई ''शुष्क संबंध।''

बच्चे के जन्म के समय ही उससे अपने भविष्य की अपेक्षाएं जोड़ने की अपेक्षा इस समाज की खुशहाली का संबंध करें तो फिर कन्या जन्मी या पुत्र, यह विचार निरर्थक हो जाता है। क्योंकि दोनों ही सूरत में मां-बाप का एक ही लक्ष्य होगा कि इसकी परवरिश-शिक्षा आदि अच्छे ढंग से करके इसे इस योग्य बना दें कि वह जहां भी रहे इसका व्यक्तित्व किसी पर बोझा नहीं बने, बल्कि यह खुद किसी बेसहारा की लाठी बनने में सक्षम हो। इस भावना से तैयार किया गया व्यक्तित्व अपने वृद्ध माता-पिता का सहारा बनने के बजाय उनकी संपत्ति पर नजरें गड़ा उन्हें बोझ नहीं समझ सकता। जबकि दूसरी ओर परिवार में नव शिशु के आगमन के समय ही यदि पुत्र है हंसी-खुशी से उसका स्वागत कर अपने भविष्य के सहारे का रुप दिमाग में रख कर उसका अच्छे से अच्छा लालन-पालन करें और यदि कन्या है तो पराया धन समझ कर एक बेगार की तरह उसके विवाह तक उसका बोझ उठाकर समाज में अपनी इज्जत बनाए रखनी है। इधर उसका विवाह हुआ उधर उससे कुट्टी। ऐसी विचार-धाराओं के साथ पालित-पोषित संतान भविष्य में अपने निकट-संबंधों जैसे माँ-बाप, भाई-बहिन आदि को अपने स्वार्थों का त्याग करके निस्वार्थ स्नेह का फल देगी, यह विचार भी इंसानी बुद्धि के दीवालियेपन का ही सबूत है। भई जिस वृक्ष की जड़ को ही जहर से सींचा गया हो उसके फल में अमृत कहां से आ पाएगा।

निस्वार्थ-स्नेह से जो आत्मीय सुख प्राप्त हो सकता है उसका स्वरुप इन दो पंक्तियों में समझा जा सकता है-

किसी से कुछ पाने की चाह में,
जिन्दगी भर मरता रहा।
काश, किसी को कुछ देकर,
एक पल तो जी लिया होता॥

बलपूर्वक भी धर्म कराना चाहिये-तेतलिपुत्र

किसी एक समय में इस भारत वर्ष में त्रिवल्ली नाम की एक नगरी हुआ करती थी। उस नगरी में तब राजा कनकरथ की आज्ञा बढ़ती थी। उस राजा को अपने राज्य के ऊपर बहुत मोह था। उसका राज्य कोई दूसरा ले ले वह उसको बिल्कुल ही इष्ट नहीं था। औरों की बात तो दूर की थी अपने पुत्र तक को भी वह राज्य देना नहीं चाहता था। इसलिये ही तो वह अपनी रानी कमलावती को जो भी पुत्र होता था उसको पैदा होते ही मरवा देता था। कमलावती से यह सब सहन नहीं होता था किन्तु वह करें भी तो क्या ? सहन किये बिना और कोई चारा भी तो नहीं था। कालक्रम से व एक बार फिर से गर्भवती हुई। अभी वह पुत्र के लिये तड़पती थी, उसका जन्मा हुआ पुत्र जिंदा रह जाए ऐसी उसकी अदम्य इच्छा थी। पुत्र हो तो उसको कैसे जीवित रखना उसके लिये विचार करने लगी और इसके लिये उसने राजा के मंत्री तेतलिपुत्र को विश्वास में लिया।

तेतलिपुत्र नगर सेठ की पुत्री पोटिला के साथ प्रेम से शादी की थी। रानी ने मंत्री को बुलाकर कहा- ''मुझे अगर पुत्र हुआ तो उसकी रक्षा करने का मुझे वचन दो।'' मंत्री ने उसको वचन दिया। उस अरसे से मंत्री की पत्नी पोटिला भी सगर्भा थी। दैवयोग से दोनों को साथ में ही प्रसूति हुई। रानी ने पुत्र को और पोटिला ने पुत्री को जन्म दिया। पहले से नक्की किये अनुसार संतानों की फेरबदल कर दी। नगर में जाहिर हुआ कि रानी के वहां पुत्री का जन्म हुआ है और मंत्री के वहां पुत्र का जन्म हुआ है। मंत्री ने रानी के पुत्र का नाम कनकध्वज रखा। कालचक्र से कनकरथ राजा की मृत्यु हो गई और रानी ने कनकध्वज को राजगद्दी पर बिठाया। कनकध्वज मंत्री तेतलिपुत्र का बहुत ही मान रखता था और उसकी सलाह के अनुसार ही राज्य का कारोबार करता था।

पुरुष का मन भौंरे की तरह होता है। इस तरह तेतलिपुत्र का मन भी समय जाते पोटिला पर से उठ गया। उसके ऊपर का प्रेम मंद हो गया। पोटिला ने पति का प्रेम वापस पाने के लिए किसी एक साध्वी के पास उपाय पूछा। साध्वी महाराज ने पोटिला को धर्म देशना दी। वह सुनकर पोटिला को संसार के ऊपर वैराग्य उत्पन्न हुआ। दीक्षा के लिये उसने तेतलिपुत्र से आज्ञा मांगी। तेतलिपुत्र ने कहाकि ''दीक्षा देकर जब तू स्वर्ग में जाए तब वहां से तू मुझे प्रतिबंध कराने का अगर तू मुझे वचन देती है तो मैं तुम्हें दीक्षा लेने के लिए सम्मति दूं।'' पोटिला ने उसको वचन दिया।

पोटिला ने भी दीक्षा लेकर सम्यक प्रकार से चारित्र धर्म की आराधना की। इस तरह की हुई आराधना कभी निष्फल नहीं जाती। साध्वी पोटिला भी कालक्रम से आराधनापूर्वक देहत्याग करके स्वर्ग में गई। वहां जाकर उसने तुरन्त ही अवधिज्ञान का उपयोग करके अपने पूर्वभव को देखा और तेतलिपुत्र को दिया हुआ वचन याद आया। उसने तुरन्त ही मंत्री को धर्म में जोड़ने के लिये प्रेरणा करने का प्रयास शुरु कर दिया परन्तु विषय विकारों में लुब्ध जीवों को ऐसे कुछ आसानी से धर्म करने का उत्साह नहीं जगता है। इस कारण से मंत्री तेतलिपुत्र को भी धर्म के प्रति कुछ भी रस जमा नहीं। इसलिए पोटिला ने अब सख्त उपाय आजमाने शुरु कर दिये।

उसने कनकध्वज को भड़का के मंत्री तेतलिपुत्र का भयंकर अपमान करवाया। कनकध्वज ने उसके ऊपर गुस्सा किया और बहुत से कटुवचन कहे। अपमान की आग से तेतलिपुत्र जल उठा। उसके स्वमान को चोट लगी। इसलिए उसने ऐसा अपमानित जीवन जीने के बदले मरना पसंद किया। तेतलिपुत्र ने उस नगर को छोड़ दिया और जंगल में जाकर तालकूट विष पी लिया लेकिन देव के प्रभाव से उस विष की कुछ भी असर नहीं हुई। इसके कारण तेतलिपुत्र ने आग में छलांग लगाई तो वह आग भी बूझ गई। उसने समंदर में डूबकी लगाई तो भी डूब नहीं सका। इस तरह आत्महत्या के तमाम प्रयास उसने कर देखें परन्तु देव के प्रताप से वे सब प्रयास निष्फल गये।

एक बार वह किसी जंगल में से पसार हो रहा था। वहां उसके पीछे एक जंगली हाथी से बचने के लिये वह भागा। भागते-भागते वह एक खड्डे में गिर गया और बेहोश हो गया। होश में आते ही सहसा ही वह बोल पड़ा- ''अरे ओ पोटिला ! तू कहां है ? क्या मेरी ऐसी हालत की तुझे जरा सी भी दया नहीं आती ? मौत भी मेरा साथ नहीं दे रही है। अब मैं किसके शरण जाऊं ?

इतना सुनते ही पोटिला प्रकट हुई और कहा-

''तेतलिपुत्र ! मैं तेरे साथ ही हूं लेकिन तू मुझे देखता ही कहां है ? और फिर उसने देवलीला की सब बातें बताई। वह सुनकर मंत्री ने कहा- ''मुझे क्षमा करें देव ! अज्ञानता के कारण मुझे कुछ पता नहीं चल पाया। लेकिन अभी मैं प्रथम श्रावक धर्म का पालन करुंगा और फिर दीक्षा लूंगा परन्तु इससे पहले आप मुझ पर एक उपकार करें और मेरे ऊपर राजा कनकध्वज प्रसन्न हो ऐसा कीजिए।

देवता ने तुरन्त ही कनकध्वज को प्रसन्न कराया। तेतलिपुत्र उसके बाद श्रावक के बारह व्रतों का पालन करने लगा। एक दिन उसने किसी ज्ञानी गुरु भगवंत के पास जाकर अपना पूर्व भव पूछा। गुरुदेव ने कहा कि- पूर्व भव में तू महाविदेह क्षेत्र में पुंडरिकीणी नगरी में महापद्म नामक राजा था। वहां पर गुरुदेव की प्रेरक देशना को सुनकर तूने दीक्षा ली थी। अनुक्रम से तूं चौदह पूर्व का पारगामी हुआ था। प्रांत में एक मास का अनशन करके महाशुक्र देवलोक में देवता हुआ। वहां से च्यवन होकर तूं यहां तेतलिपुत्र हुआ है।

अपने पूर्व भव को सुनते ही तेतलिपुत्र को जाति स्मरण ज्ञान हुआ। पूर्व भवों को साक्षात देखकर उसने तुरन्त ही वहां चारित्र लिया। चारित्र धर्म का विशुद्ध रुप से आराधना करते हुए कालक्रम से उसने मुक्ति पद को पाया।

इस तरह उत्तम साधु भगवंत अनेक युक्तियों के द्वारा उपासकों को प्रतिबोध कराते हैं। जगत में सूर्य की तरह कान्ति के जैसा धर्मोद्योत करने वाले पुरुष पोटिला की तरह प्रशंसनीय है।

क्या चोरी का माल हम खरीद सकते हैं ?

प्रश्न- बाजार मूल्य से आधी कीमत पर, उतनी ही अच्छी वस्तु अगर कभी मिले तो सामान्यतः ऐसा ही अनुमान किया जाता है कि यह चोरी का माल होना चाहिये...? लेकिन हम तो पैसे देकर वस्तु खारीदते है और किसी प्रकार की जांच-पड़ताल हम नहीं करते.... तो उसमें कुछ गलत माना जा सकता है ? किस प्रकार...?

उत्तर- भारतीय आर्य पुरुषों ने, शिष्ट पुरुषों ने चोर तथा चोरी के विषय में अत्यन्त विशद-सुंदर मार्गदर्शन दिया है इसे हम देखें....

✻ चोर स्वयं तो चोरी करनेवाला होने के कारण चोर है ही....

✻ चुराकर लाई गई वस्तु बेचने में सहाय करनेवाला।

✻ चोर को अपने घर भोजन-पानी देनेवाला।

✻ पैसे देकर उसे सहायता या उत्तेजना देनेवाला।

✻ चोरी के काम के लिये उसे सलाह या सूचन देनेवाला चोर को, दलाल के रुप में या व्यापारी के रुप में आश्रय देनेवाला और चोरी का माल खरीदनेवाला.... ये सभी वर्ग के लोग चोर के समान ही दोषी माने जाते है...!

स्मरण रहे- चोरी करनेवाला, चोरी करानेवाला, चोरी को अच्छा कार्य माननेवाला.... सब चोरी के पाप के भागी निश्चित रुप से बनते हैं। इस प्रकार की चोरी करने-करानेवाले प्रायः करुणा-दया-मानवता विहीन, निर्लज्ज समय आने पर स्वजन के भी घातक, मापमति, दुष्ट बुद्धिवाले होते है। केवल चोरी के प्रति ही जिनका मन और ध्यान केन्द्रित है ऐसे लोग दूसरे लोगों के दुःख और कष्ट का विचार भी नहीं कर सकते।

चोरी का कार्य ही जिन्हें प्रिय है ऐसे लोग अन्य अनेक प्राणी और जीवों के साथ वैर-विरोध, झगड़ा-फसाद आदि के कारण दूसरों को तो हानि पहुंचाते ही है, साथ-साथ अपनी शांति, समाधि, प्रसन्नता और आनंद पर भी आग लगा देते हैं। चोरी के द्वारा प्राप्त किया गया धन कभी निर्भिक रुप से भोगा नहीं जा सकता है। चोर हमेशा भयभीत और शंकित रहता है। जिन्हें वह अपना मानता है उन पर भी कभी वह विश्वास नहीं करता...!

प्रखर जैन कविवर श्री वीरविजयजी महाराज कहते हैं-

चोरीनुं धन न रहे धरमां
चोर सदा भूखे मरे
चित्त चौक्खे चोरी नवि करीएं....
चित्त चोक्खे चोरी नवि करीए....

संक्षेप में कहें तो-

मन की मलिनता में वृद्धि करनेवाले, स्व एवं पर को नुकसान करनेवाले, सुख को लूट, लेनेवाले चोरी जैसे दुष्कार्य से तो दूर रहने में ही सर्व प्रकार से मंगल, कल्याण एवं आनंद है।

जिन दर्शन व अष्ट प्रकारी भाव पूजा का अध्यात्मिक महत्व

परमात्मा की पूजा परमात्मा बनने के लिये ही करनी चाहिये। द्रव्यार्थिक या निश्चय नय से ''आत्मा'' एक ही है व शरीरादि पर द्रव्यों से संपूर्ण भिन्न है परन्तु पर्यायार्थिक या व्यवहार नय से आत्मा के तीन प्रकार बतलाये गये है

1- पर द्रव्यों में अहंबुद्धि, निज स्वरुप के प्रति बेभान, राग, द्वेषादि से ग्रसित संसारी वह बहिरात्मा। ऐसी आत्मा अनंत भवों तक संसार में भटकती है।

2- निज चैतन्य स्वरुप में अहंबुद्धि, एकत्व बुद्धि, शुद्धात्मानुभूति व मोक्ष मार्ग में प्रवृत्ति आत्मज्ञान से जागृत आत्मा वह अंतरात्मा। ऐसी आत्मा, कुछ ही भवों में मुक्त हो जाती है।

3- शुद्ध-बुद्ध-चैतन्य घन, स्वयं ज्योति सुखधाम ऐसे ''स्व'' में संपूर्ण स्थित परम शुद्ध ज्ञान चेतना वह पर-मात्मा। ऐसी आत्मा सिद्ध, अरिहंत व केवलीयों की होती है। ऐसे ही हमें परम-आत्मा बनने के उद्देश्य से ही परमात्मा की पूजा करनी चाहिए ना कि भौतिक सुखों की कामना के लिये। कामना सहित (सकाम) पूजा कर्म का नया बंध कराती है व निष्काम पूजा ही (भावपूजा के साथ) पूर्ण्याजन या कर्म क्षय कराती है। भावपूजा करते वक्त उन दोहों के अर्थ का चिंतन करते-करते जब उसमें बताया गया भावार्थ हमारे आचरण में आ जाता है, दोहों में जो बताया गया है, उस अनुसार यदि हम वर्तने लगते है तब वास्तविक उदिरणा-सकाम निर्जरा होती है और यही परमात्मा के दर्शन या पूजा का वास्तविक उद्देश्य है।परमात्मा के पूजन में सात प्रकार के शुद्धि बताई गई है।

1- अंगशुद्धिः- तालाब, सरोवर, होद या नल के नीचे बैठकर नहाने से पानी का दुरुपयोग व अनंत जीवों की विराधना का पाल लगता है। इसीलिये बाल्टी में पानी लेकर (परिमित) गिलास से नहाना चाहिये। नहाते हुए भी यही ध्यान करना कि परमात्मा पूजन में शुद्धि के लिये इस शरीर को व मन को शुद्ध करना है। आत्मा तो सदैव शुद्ध ही है।

2- वस्त्र शुद्धिः- पूजा के वस्त्र अलग ही रखने है व साफ होने चाहिये।

3- मन शुद्धि :- संसार के विषयों को मन से निकालकर पूर्णतः परमात्मा के ध्यान में व आत्मध्यान में लीन होते हुए सरल भाव से रहना चाहिये।

4- भूमि शुद्धिः- मंदिर बनाने की भूमि व पूजा करते वक्त नीचे के भूमि शुद्धि का ध्यान रखना चाहिये।

5- पूजा के उपकरण, सामग्री आदि की शुद्धि का ध्यान रखना।

6- द्रव्य शुद्धिः- न्याय से उपार्जित द्रव्य ही धर्म क्रिया में लगे इसका ख्याल रखना।

7- विधि शुद्धि का ध्यान रखना।

इन शुद्धियों का ध्यान सिर्फ पूजन में ही नहीं परन्तु हमारे रोज के व्यवहार में, संसार के कामों में भी कैसे उतरे इसका भी रोज चिंतवन करते रहेंगे तो ही ये हमारे जीवन में उतरकर हमारी आत्म शुद्धि में विशेष सहयोगी बनकर हमें अध्यात्म की ओर (अध्यात्म-आत्मा के अधिन होना), स्व की ओर ले जायेगीऔर वास्तविक मोक्ष मार्ग या शीवपद प्राप्ति का साधन बनेगी।

मंदिर एक आध्यात्मिक अभिनय प्रधान प्रयोगशाला है जिसका उद्देश्य घट मंदिर में रहे हुए आत्मदेव का साक्षात्कार कराना है। यह मानव शरीर एक जिनालय के समान है। जैसे जिनालय योग का ही साधन है भोग का नहीं वैसे ही मानव शरीर भी केवल योग का ही साधन है भोग का नहीं। जैसे जिनेश्वर भगवान, मन, वचन, काया के योगों को एवं अशुद्ध उपयोग को जीतकर जिनालय में पूज्य-पद पर आरुढ़ है वैसे ही हमारे देह में स्थित शुद्धात्मा भी उस पद पर आरुढ़ हो सकता है और यही उसका कर्त्तव्य है।

पूजन विधिः- प्रातःकाल में उठते ही अपने हृदय को सुलटा कर हाथों को (हथेलियों को) मिलाकर सिद्धशिला के ऊपर बिराजे हुए चौबीस तीर्थकर जो रागादि शत्रुओं को जीतने वाले सम्पूर्ण आत्म ऐश्वर्य युक्त सम्यक् विधि प्रदर्शक जिनेश्वर भगवान है एवं अनंत सिद्धों के चैतन्यमूर्ति को स्थापना करके शरीर में सातों धातुओं के भेदन पूर्वक अत्यन्त उल्लास भाव को धारण करते हुए जिन चरणों में नमस्कार कर, अपनी स्वयं की शुद्धात्मा को पूज्यता प्रदान करने वालों को भाव पूजन-अर्चन करना।

सातों शुद्धियों का ध्यान रखते हुए घर से जिन मंदिर के लिये हो सके वहां तक पैदल, बिना चप्पल के, नीचे तीन हाथ जमीन देखते हुए, अपना उपयोग ''स्व'' की ओर आत्मचिंतन में रखते हुए आत्मभाव से जिनालय में पहुंचना। जिन मंदिर

की ध्वजा-शिखर देखते ही ''नमो जिणाणं, जिय भयाणं'' बोलते हुए मस्तक झुकाकर नमस्कार करना। सीढ़ियों के चढ़ते हुए संसार के सभी सावद्य कार्यो के मन-वचन-काया के योग से त्याग करने हेतु तीन बार **''निसीहि''** बोलकर मंदिर में प्रवेश करना। फिर सम्यर्ग दर्शन-ज्ञान-चारित्र रत्नत्रायी के प्राप्ति के लिये तीन प्रदक्षिणा करनी। फिर भगवान की आज्ञा के पालन हेतु आज्ञाचक्र (कपाल के मध्य में) पर तिलक लगाते हुए मन में सोचना के ''हे प्रभु ! आपने ''स्व'' को जानने की व ''स्व'' को जानने की व ''स्व'' में रहने हेतु, जो भी धर्म आराधना की पालना हेतु आज्ञा कि है उसे मैं शिरोधार्थ करता हूं।'' फिर प्रभु सम्मुख खड़े रहकर प्रभु स्तुति करनी चाहिये। यहां यह सोचना कि ''हे प्रभु !'' आप जिस रास्ते पर चलकर, जितेंद्रिय बनकर, आत्मज्ञान को पाकर, संपूर्ण साधना कर इस मुक्ति की अवस्था में पहुंचे उसी प्रकार मुझे भी आपका वितरागमय, शांत, शीतल, निर्दोष, निर्विकल्प स्वरुप यही मेरा स्वरुप यही मेरा स्वरुप है जिसे मुझे प्राप्त करना है, उजागर करना है। इस अवस्था को पाने का पूर्ण प्रयत्न करने की बुद्धि व शक्ति प्रदान कीजिए। आपकी मुद्रा सोये हुए चेतन को जगाने वाली एवं गिरती वृत्तियों को स्थिर करनेवाली है। (यहां तक कि विधि दर्शन व पूजन करनेवालों के लिये बराबर ही समझना।)

कर्म के उपकार

✲ कर्म को जो आमंत्रण देता है, उसको ही चिपकते हैं, दूसरों को नहीं।

✲ बांधने के बाद उसी वक्त उदय में नहीं आते है। अबाधाकाल तक शांत रहते है।

✲ जब उदय में आते है तब मस्तक (कपाल) में लिखाते नहीं कि तुमने अपने पूर्व (पिछले) भव में किसी का गला दबाया था इसीलिए तुम्हें कैंसर हुआ है।

✲ यह एकदम न्यायी है। छोटा भी अगर अच्छा काम करें, तो उसे महान बना देता है (जैसे- संगम जैसे भेड़-बकरी चरानेवाले ग्वाले को शालिभद्र बना देता है।) बड़ा भी अगर कोई खराब काम करें तो उसे भी छोड़ता नहीं है। (महावीर स्वामी जैसों को भी छोड़ता नहीं है।)

अध्यात्म मैत्री-वर्धक है....

अध्यात्म को मैत्रीरुप सागर को उल्लसित करने के लिये चंद्र समान कहा है- ''सौहार्दाम्बुधिचन्द्रमाः।''

अध्यात्म आता है तब मैत्री बढ़ती ही है। अध्यात्म का अर्थ होता है : आत्मा में जाना। प्रश्न हो सकता है कि जो आत्मा जायेगा वह तो अपने ही स्वरुप में डूब जायेगा। जगत के जीवों के साथ वह मैत्री कैसे कर सकेगा ? सच बात तो यह है कि जो अपनी आत्मा को जानता है वो ही जगत के जीवों को जान सकता है। जो अपनी आत्मा के साथ मैत्री करता है वही जगत के जीवों के साथ अपनी मैत्री कर सकता है। जिसने आत्मा को पहचाना नहीं या पहचानने की इच्छा भी नहीं की, उसकी मैत्री दिखवटी हो सकती है, आत्मिक नहीं।

जो अपनी आत्मा को पहचान लेता है वह सब कुछ जान लेता है। जो इसे नहीं पहचानता, वह कुछ भी नहीं जानता। देवचंद्रजी म. की पंक्ति याद कीजिए-

''जेणे आतमा शुद्धता अे पीछाण्यो
तेणे लोक अलोकनो भाव जाण्यो''

आत्मज्ञ योगी को जगत के सब जीवों के प्रति करुणा पैदा होती है। उनका दुःख उसको अपना लगता है, जगत के सब जीव स्नेह पात्र बंधु लगते हैं। ''सच्चंसि नाम तुमेव जं हंतव्वंति मन्नसि'' हे आत्मन् ! जिसको मारता है वह तू ही है। आचारांग सूत्र का यह वाक्य उसके जीवन में घुलमिल गया होता है। उसे दूसरे जीव ''दूसरे'' नहीं लगते, परन्तु उसमें अपना ही स्वरुप दिखता है। हमारे शरीर से हाथ, पैर या सिर अलग नहीं, उसकी पीड़ा वह हमारी ही पीड़ा है, उसी तरह योगी के लिये दूसरों को होनेवाली पीड़ा अपनी ही पीड़ा है। उसे सारा ब्रह्मांड जीवत्व जाति से एक लगता है। हमें सब अलग लगता है, क्योंकि हम हमारी आत्मा से ही दूरी है, इसीलिए ही जगत के जीवों को शत्रु समझते हैं, उनके साथ लड़ते है। मूर्ख भिल्ल को राजा ने अरीसा भवन में ठहराया, अपने ही प्रतिबिंब को देखकर, शत्रु की कल्पना करके उसके साथ वह लड़ने लगा, कांच तोड़ने लगा।

✲ संसार के तीन महान डॉक्टरः- डॉ. श्री पथ्य, डॉ. श्री शान्ति, डॉ. श्री आनंद - स्विफ्ट

कब करना चाहिए संवत्सरी संबंधी मिच्छामि दुक्कडं ?

संवत्सरी के एक दिन पहले भी अगर आप संवत्सरी संबंधी मिच्छामिदुक्कडं करते हो वो मिथ्यात्व ही है, ''संवत्सरिक मिच्छामिदुक्कडं'' जिसे आप ''क्षमापना'' के नाम पुकारते है वो संवत्सरी के दिन ही करना चाहिये, ईस का शास्त्रीय कारण ये हैः-

1- संवत्सरी- पर्व आराधना भगवंते इसलिए बताई है कि एक साल से ज्यादा हमारे क्रोध, मान, माया, लोभ होते है तो उसे अनंतानुबंधि कषाय कहते हैं, ईस के उदय से सम्यत्तव की प्राप्ति नहीं होती, सम्यत्तव के अभाव से देशविरति से लेकर मोक्ष तक कुछ भी प्राप्त नहीं होता, अगर आप इतना समझते तो कभी इतने दिन पहले संवत्सरी संबंधी मिच्छामिदुक्कडं कर के मिथ्यात्व आचरण नहीं करते।

2- बृहत् कल्पसूत्र नामक आगम के उद्देशक 5 वें भाष्य गाथा 5770 से 5772 की वृत्ति एवं चूर्णा में बताया है कि भादरवा सुदी-पंचमी के दिन सूर्य उदय के पहले या पूर्व में किसी भी दिन से संवत्सरी के दिन तक अर्थात् पंचमी दिन पूर्ण होने तक को संवत्सर कहा जाता है, जिस तरह आप अपना नाणाकीय हिसाब पहेली अप्रेल से लिखो, बीच में किसी भी दिन लिखो या 31 मार्च सुबह लिखो, मगर इन्कमटेक्स विभाग में तो 31 मार्च रात बारह बजे तक एक साल ही गिना जाता है ठीक उसी तरह यहां ''कषाय उपशान्तिरुप'' संवत्सर गिना जाता है। उसके बाद में भादरवा सूद-छट्ठ के दिन से नया संवत्सर आरम्भ होता है, बृहत्कल्प की भाष्य गाथा 5771 में बताते है कि संवत्सरी के दिन स्वाध्याय स्थापना समय, अथवा चैत्यवन्दन अवसरे अथवा आखिर में (प्रतिक्रमण वेलायां सारयन्ति) मतलब-प्रतिक्रमण वेला कषायो को उपशान्त करके खामाए अर्थात् मन वचन काया से ''मिच्छामि दुक्कडं'' करें।

निशीथसूत्र नामक आगम शास्त्र में भी यही बात स्पष्ट बताई है।

3- पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी ने भी अष्टान्हिका पर्व के व्याख्यान में कहा है कि ''क्षमापना याने होली बुझाने का दिन'' वो दिन मुकरर ही है, और वो दिन है संवत्सरी।

जिस तरह व्यवहार में 31 मार्च को सब बहीखाते बंद करके उसी दिन की क्लोजिंग एन्ट्री इन्कम टेक्स खाते में दिखानी पड़ती है, उसी तरह संवत्सरी के दिन ही ये वार्षिक कृत्य होता है, अगर आप एक, दो या ज्यादा दिन पहले करेंगे तो अगले साल संवत्सरी के दिन एक साल से ज्यादा हो जाने के कारण आप अनंतानुबंधि कषाय में चले जाओगे और अगर आप अपनी इच्छानुसार करोगे तो मुकरर किये हुए दिन का भंग करने से तीर्थंकर की आज्ञा के उल्लंघनकर्ता बनोगे।

4- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री को फिरसे पंचमी की संवत्सरी आरंभ करने के बारे में पूछा गया तब भी उन्होंने कहा था कि कभी आवश्यकता पड़े तो चोथ के बदले तीज की संवत्सरी हो सकती है, मगर पंचमी की कभी नहीं हो सकती क्योंकि अनंतानुबंधि की मुद्दत 1 वर्ष की होती है, इसी कारण से इतने दिन पहले संवत्सरी मिच्छामिदुक्कडं कर नहीं सकते।

5- हमारे पूर्वाचार्य आदि श्रमण भगवंतों ''पर्युषण'' के विषय में जो थोय के जोड़े, स्तवन, सज्झाय आदि रचना की है, उसमें भी संवत्सरी के दिन ''खमाने'' के शब्द ही अपनी कृतिओं में उतारे है, कही किसी महापुरुष ने संवत्सरी के पूर्व ''खमाने'' का विधान नहीं लिखा।

सारांश ये किः-

सांवत्सरिक मिच्छामिदुक्कडं संवत्सरी के दिन ही करना चाहिये एक भी दिन पहले हो नहीं सकता। इस विषय में किसी को शास्त्र चर्चा करनी हो तो मेरा खुल्ला निमंत्रण है।

.... आगम दिवाकर डॉ. मुनि दीपरत्नसागर

मो. नं. 09825967397

भय और उत्साह

दु:ख के वर्ग में जो स्थान भय का है, आनंद के वर्ग में वही स्थान उत्साह का है। सब में भय- भोग में रोग का, सुख में क्षय का, सत्ता में भ्रष्ट होने का, पैसें में सरकार आदि का, कीर्ति में निंदा का, रुप में वृद्धत्व का, देह में मृत्यु का, शास्त्र में विवाद का, गुण में दुर्जनों का, सेठ में मजदूरों का, मजदूरों में सेठ का, साधना में विघ्न का, उद्यम में प्रमाद का, तप में क्रोध का, क्रिया में निंदा का, ज्ञान में अभिमान का, आहार में अजीर्ण का, विजय में शत्रु का।

वर्ग पहेली क्रमांक-327

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2	■	3			4	5	■
6		■		■	■	7		8
■	9			10	■		■	
11		■	12		13	■	14	
	■	15		■	16		■	
17		■	■	18		■	19	
	■	20	■	■	21			■
22	23		24	■		■	25	26
■	27					■	28	

बाएं से दाएंः-

1- शत्रुंजय क्षेत्रे, ऋषभ जिणंद जयकार तीणे तीरथ प्रगट्यो, --- नवाणुवार (2)

3- इरोड जिले में चंद्रप्रभुजी का छठी सदी का जैन मंदिरवाला तीर्थ वि--- म तीर्थ (5)

6- पाटण में बिराजे है श्री---ण पार्श्वनाथ (2)

7- रतलाम के निकट भ.ऋषभदेव का प्राचीन तीर्थ बि--- (3)

9- भ.धर्मनाथजी का केवलज्ञान स्थल--- (4)

11-पल का पर्याय--- (2)

12-कर्नाटक में नेमिनाथ प्रभु का तीर्थः का---(3)

14-अष्टप्रकारी पूजा में प्रथम होती है--- पूजा (2)

15-स्वभाव मां रे अवधू सदा मगन में रहना (2)

16-भ.आदिनाथ का लांछन---भ (2)

17-मेहनत का पर्याय परि--- (2)

18-मति का पर्याय---(2)

19-चार्तुमास का एक महिना श्रा---(2)

21-भ.वासुपूज्यजी की जन्मस्थली चं--- (3)

22-नलिनी गुल्म विमान सा, अद्भूत शिल्पकला युक्त भ.आदिनाथ का तीर्थ रा--- (4)

25-जग मां---थ दोय बड़ा, शत्रुंजय गिरनार, एक तीरथ ऋषभ समोसर्या, एक तीरथ नेमकुमार (2)

27-मुंडावा(पाली)में विराजित है श्री मंडो---थ (2,3)

28-त्रिषष्टिशलाका पुरुषों में शामिल है 24 ती---र (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-326 का परिणाम

ह	स्ति	ना	पु	र	■	हा	दे	वी
रि	■	गो	■	ण	मो	■	ल	रा
भ	ण्डा	र	■	■	ह	ला	द	■
द्र	■	■	धा	रा	न	ग	■	म
सू	रा	चा	■	जू	■	त	न	हा
रि	■	लि	का	ल	स	■	■	वी
■	सं	सा	र	■	■	श्री	धा	र
दे	व	■	क	वा	■	बा	■	स्वा
वी	र	वा	■	सु	बा	हु	स्वा	मी

ऊपर से नीचेः-

1- गले-गले तक का पर्याय---ठ (2)

2- गणधरों द्वारा रचित द्वादशांगी में से एक प्रश्न---(4)

3- वर्तमान की फलौदी नगरी का प्राचीन नाम वि--- त्तन (5)

4- प्रेमचंद का एक प्रसिद्ध उपन्यास---(3)

5- आपस में---झगड़ें नहीं, मिल जुल कर रहो यही सीख है गुरुवर की (2)

8- पर्युषण महापर्व को दिगम्बर आम्नाय---पर्व के रुप में मनाते है (5)

10-नौ प्रतिवासुदेव में से एक ता--- (2)

11-आगम ग्रन्थो को युगों तक चिरस्थायी बनाने के लिए श्रुत लेखन का महत्वपूर्ण कार्य करने वाले महापुरुष आचार्य श्री देवर्धिगणि--- (5)

13-अड़सट तीर्थ की यात्रा का लाभ इस एक तीर्थ की यात्रा करने से मिलता है फ---थ (3,3)

19-जोधपुर जिले में भ.वासुपूज्यजी का प्राचीन मंदिर यहां है-ती---(2,2)

20-सिरोही के मीरपुर में बिराजे है श्री हमी---पार्श्वनाथ (3)

23-हिन्दी में वचन के दो भेद होते है- ए---चन और बहु वचन (1,1)

24-आलोट के निकट उन्हेल में बिराजे है श्री नागेश्व-- र्श्वनाथ प्रभु (1,1)

26-शून्य का पर्याय नि---(2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-327

*** आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**

प्रश्न- नीचे दिये गये वाक्यों में तीर्थो के नाम छुपे है उसे खोजकर लिखों।

1- महाराज महल में आते ही सीधे गृह मंदिर में गये।

2- भोपारामजी को कुल देवता ने वरदान मांगने को कहा।

3- कुमारिका वीर प्रभु को वंदना करके आगे बढ़ी।

4- तु प्रभु मेरा, मैं प्रभु तेरा।

5- ताराचंदजी रंगादी को बुलाने गये।

6- मीनाक्षी भोजनान्ते वाम कुक्षि करती है।

7- ''वंदे मातरम्'' भारत देश का राष्ट्रीय गीत है।

8- गिरि के शिखर पर कदम्ब के वृक्ष है।

9- गिर के अभ्यारण्य में अनार के वृक्ष पाये जाते है।

10-हस्तरेखा के अच्छे जानकार गिरिजा शंकर जोशी है।

11-सेफ्रली और सावित्री को बहुत जल्दी रीस आती है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-326 के परिणाम

विजेता:-

1-भेरुलाल पगारिया, उज्जैन (म.प्र.) - प्रथम

2-श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) -द्वितीय

3-श्रीमती सुधाधारीवाल, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

भारती जैन, प्रभा जैन,देवास श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर, श्रीमती कुसुम गौतम जैन, आगर, श्रीमती सरोज तलेरा, इनदौर, स्नेहलता जैन, मंदसौर, कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा, सुधा लोढ़ा, उज्जैन।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-326 के परिणाम

1-भारती जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम

2-सुधा लोढ़ा, उज्जैन (म.प्र.) -द्वितीय

3-विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर-

1- कार्तिक सुद-एकम, 2- वैशाख सुद-तीज, 3-माघ सुद-ग्यारस, 4- महा वदी-तेरस 5- चैत्र वदी-अष्टमी, 6- आषाढ़ सुद-पूनम, 7- फागण सुद-तेरस, 8-कार्तिक सुद-पूनम, 9- प्रजातंत्र दिन-15 अगस्त 1947/26 जनवरी 1950 10-चैत्र वदी- तीज 11- महा सुद-पंचमी।

इनके भी उत्तर सही थे:-

स्नेहलता जैन,मंदसौर, चंदनबाला जैन, प्रभा जैन,देवास

नोट:- प्रश्न क्रमांक 9 का सही उत्तर 15 अगस्त 1947 है परन्तु प्रजातंत्र दिन प्रश्न में था तो हम 26 जनवरी 1950 को भी सही मान रहे है।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-8-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

अभ्युदयपुरम् में 125 आराधक 50 दिन की आराधना कर रहे है

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा. ,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागरजी म. सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा काचातुर्मास प्रवेश अभ्युदयपुरम् नवनिर्मित तीर्थ में दिनांक 9 जुलाई को हुआ यहां 125 आराधक 50 दिवसीय चातुर्मास आराधना कर रहे है। नौ दिवसीय नवकार मंत्र की आराधना का आयोजन 30 जुलाई से 7 अगस्त तक किया गया। आराधक को एकासणा करवाने के लिये महिला मंडल अलग-अलग दिन आकर भक्ति कर रहे है। अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अचतमुक्ति सागरजी म.सा. को आचार्य पदवी पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। लगभग 70-75 जिन बिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है।

साध्वीश्री दिव्ययशाश्रीजी का चार्तुमास बैंगलोर में

बैंगलोर- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री निर्मलयशा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री दिव्य यशा श्रीजी म.सा. श्री दिव्यदर्शा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का मंगलमय चार्तुमास बैंगलौर के श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ मंदिर 7/4 चौथा मेनरोड़ गांधीनगर पोस्ट बॉक्स 9717 बैंगलोर-560009 (कर्नाटक) में होने जा रहा है। । सम्पर्क- महाराज-9893277471

पालीताना में उपधान

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयानंद सूरीश्वरजी महाराज एवं पूज्य उपाध्याय श्री दिव्यानंदविजयजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा श्री गजभंवर जैन धर्मशाला में 12 सितंबर से उपधान तपाराधना का शुभारंभ होगा। तप की मोक्षमाल 2 नवंबर को होगी।

केशरवाड़ी में उपधान तप

चैन्नई- श्री कलापूर्ण जैन आराधक मंडल के संयोजन में केशरवाड़ी में श्रावक से श्रमण बनने की धार्मिक क्रिया उपधान का आयोजन होने जा रहा है।पू. आचार्यश्री उदयप्रभ सूरीजी म.सा. की निश्रा में आयोजित होनेवाले उपधान का प्रथम मुर्हूत 18 दिसंबर को है, द्वितीय मुर्हूत 20 दिसंबर को तथा मोक्षमाला रोपण 5 फरवरी 2023 को होगा।

गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा

गिरनार- तपोवन के पूज्य पंन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखरविजयजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा., पंन्यास श्री विजय पद्मदर्शन म.सा. एवं मुनिश्री दिव्यपद्म विजयजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा होने जा रही है। पूज्यश्री का प्रवेश 9 नवंबर को होगा एवं नव्वाणुं यात्रा 10 नवंबर से आरंभ होगी। सम्पर्क करें- 9265643444

पिण्डवाड़ा धर्मशाला में आराधना

पालीताना- मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य उपाध्याय युवद श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री विरक्तरत्नसागरजी म.सा. के साथ साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 10 जुलाई को हुआ। यहां 130 आराधकों के साथ 51 दिवसीय आराधना हो रही है। आराधक 5 तिथि पर आयंबिल की आराधना कर रहे है। मुनिश्री विरक्त सागरजी म.सा. की प्रेरणा से डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक ने भी आयंबिल करवाने का लाभ लिया। शत्रुंजय भाव यात्रा की पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक का सम्मान भी किया गया।

पू. साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी का चार्तुमास पालीताना में

पालीताना- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या शशिप्रभा श्रीजी म. सा., साध्वी श्रीचारुधर्माश्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास जंबुदीप परिसर पालीताना में हो रहा है।

गिरनारजी में 108 नव्वांणु यात्रा होगी

चैन्नई- श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री गिरनार महातीर्थ में 108 नव्वांणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यात्रा का आरंभ दिनांक 22 फरवरी 2023 को होगा। संघमाल 26 मार्च को होगी। संपर्क-9840052494

विश्व शांति के लिये युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी की निश्रा में 27 दिवसीय शांतिधारा तप

✻ गोरेगांव में चार्तुमास प्रवेश 9 जुलाई को शानदार रहा। ✻ मांगलिक 29 जुलाई को हुई। ✻ मुनिश्री उदयरत्नसागरजी एवं मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 7 जुलाई को श्री भक्ति पार्श्वनाथ श्री संघ गुंदेचा गार्डन में हुआ।

मुंबई- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागर सूरी जी महाराजा के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा.एवं युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्रीउज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्री,प.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागर जी म. सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा गोरेगांव चिंतामणी पार्श्व नाथ श्री संघ में 9 जुलाई को भव्य चार्तुमार्सिक प्रवेश के साथ धर्माराधना की मंगलमय शुरुआत हो गई। मालवा से बड़ी संख्या में भक्त मुंबई प्रवेश पर पहुंचें। मालवा के संत युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.एवं युवा मुनिभगवंत के साथ दिनांक 17 जुलाई को पूज्यश्री ने सर्जिकल स्ट्राईक पर जाहिर प्रवचन दिये। सैकड़ों की संख्या में धर्मिष्ठों ने धार्मिक सर्जिकल स्ट्राईक को प्रवचन हाल में महसूस किया इसके साथ ही विश्व शांति की मंगल भावना के साथ 27 दिवसीय शांतिधारा तप का मंगल शुभारंभ दिनांक 20 जुलाई से हुआ। आपकी मंगल प्रेरणा और मार्गदर्शन में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी जिनालय शुद्धिकरण का भव्य आयोजन मध्यप्रदेश,गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के विभिन्न नगरों के श्रीसंघ में स्थित जिनमंदिरों में किया जायेगा। लगभग 1500 जिन मंदिरों के शुद्धिकरण का लक्ष्य रखा गया है। यह भव्य आयोजन दिनांक 14 अगस्त को किया जायेगा।इसी जिनालय में शुद्धिकरण कीट का वितरण भी किया जायेगा। इसके साथ ही गोरेगांव श्री संघ से विभिन्न तप, जप, आराधना और अनुष्ठानों का भी शुभारंभ हो गया है। दिनांक 28 जुलाई को पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा की 148 वीं जन्म जयंति पर भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। आगम वाचन, भाव यात्रा, नवकार आराधना का आयोजन भी आगामी दिनों में किया जायेगा।भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई सागर समुदाय के गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंतों का हमेशा से ही धर्माराधना में विशिष्ट स्थान रहा है। प्रतिवर्ष चातुमार्सिक आराधना के द्वारा प्रभुवीर के धर्म सिद्धांतों का स्थापन करने और शासन प्रभावना में महत्ता योगदान रहता है। इस वर्ष 2022 में भी मुंबई के अनेक श्री संघों, सागर समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों के चार्तुमास होने जा रहे है इसमें मालवा के गुरु भगवंतों के चार्तुमास का विशिष्ट योगदान रहेगा। गोरेगांव में 9 जुलाई के चार्तुमास प्रवेश के बाद दिनांक 29 जुलाई को महामांगलिक का महायोजन हुआ। मुनिवर उदयरत्न सागरजी और मुनि श्री उत्तमरत्न सागरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 7 जुलाई को हुआ। चातुमार्सिक आराधना के लिये पूज्य साध्वी श्रीहर्षितप्रज्ञा श्री जी म.सा.आदि ठाणा-6 में विराजमान है। दीपावली पर सूरी मंत्राराधना नूतनवर्ष की महामांगलिक भी होगी इसके पूर्व महापर्व पर्युषण की आराधना पर सामूहिक तप आराधना भी होगी।

वागड़ नरेश का प्रवेश तलवाड़ावालों ने करवाया

✲ पालीताना में चार्तुमास प्रवेश 10 जुलाई को हुआ
✲ उपधान तपाराधना 27 अक्टूबर से होगी।

नरोड़ा- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हाड़ेचा भवन पालीताना में हो रहा है। प्रवेश 10 जुलाई आषाढ़ सुद-11 को हुआ इस मंगल प्रसंग पर बड़ी संख्या में धर्मिष्ठ मध्यप्रदेश, गुजरात से आये थे। मुनिश्री मुनिरत्नसागरजी, श्री गंभीर रत्न सागरजी एवं मुंबई के श्री पंकज महाराजा में हाड़ेचा धर्मशाला में ही विराजमान है। इसके साथ ही आपश्री की निश्रा में उपधान तप का शुभारंभ 27 अक्टूबर को होगा। चार्तुमास एवं उपधान तप के संपूर्ण लाभार्थी प्रेमलता बहन जयंतीलाल, प्रयास गांधी परिवार तलवाड़ावाले है। वागड़क्षेत्र के धर्मिष्ठों के लिये यह विशेष आयोजन है।

श्री सिद्धाचल की 99 यात्रा

मुंबई- श्रीमद् विजय नेमीसूरीजी समुदाय के आचार्य भगवंत श्री सोमसुन्दर सूरीजी म.सा.आदि साधु साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में सिद्धाचल गिरिराज की 99 यात्रा का आयोजन श्रीमती मोहित बहन रतनचंद चौहान परिवार के द्वारा किया जा रहा है। 99 यात्रा का शुभारंभ दिनांक 8 नवंबर को होगा। मालारोपण बहुमान 12 दिसंबर 2022 को किया जायेगा। यात्रा की पूर्णाहुति 17 दिसंबर को होगी। सम्पर्क-9324368679

जयपुर में चार्तुमास

उज्जैन-पूज्य साध्वी श्री सिद्धांत ज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर तपागच्छ श्री संघ श्री आत्मानंद सभा भवन 2067 घी वालों का रास्ता, जवेरी बाजार, जयपुर (राज.) में चल रहा है। प्रवेश 4 जुलाई को हुआ।24 जुलाई को मात पितृ वंदनावली का आयोजन किया गया तथा माता पिता का सम्मान भी किया गया।

पायधुनी में दो युवा शिविर लगे

मुंबई- श्री आदेश्वर पंच धर्मशाला जैन मंदिर परिसर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. की निश्रा में दो युवा शिविर का आयोजन हुआ। द्वितीय शिविर में दिनांक 24 जुलाई को पूज्यश्री के प्रिय विषय श्री शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना की शुद्धता पवित्राता और विशेषताओं से अवगत कराते हुए युवा जगत को जाग्रत करने का प्रयास किया गया।

सुभाष नगर उज्जैन में चार्तुमास

उज्जैन- श्रीचौमुखी जिनालय जैन श्री संघ सुभाषनगर में साध्वीवर्या श्री सूर्यकांता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 का चार्तुमास तप-जप-प्रवचन के साथ प्रसार हो रहा है। श्रृंखलाबद्ध आयंबिल, तपाराधना चल रही है।

200 सिद्धि तप मुंबई में

मुंबई-गोरेगांव श्री नगर जैन संघ में चार्तुमास हेतु विराजित आचार्य श्री पूर्णचन्द्रसूरीजी म.सा. की निश्रा में हो रहे सिद्धि तप की आराधना में 200 तपस्वी तपाराधना कर रहे है। नियमित प्रवचन में भी अच्छी उपस्थिति रहती है।

इन्दौर में श्रीसागर जन्मोत्सव

इन्दौर- तिलकनगर में स्थित श्री तिलकेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर परिसर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्यश्रीचन्द्रकीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में यहां पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीश्वरजी महाराजा के 148 वें जन्म दिन दिनांक 28 जुलाई को भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर मुख्य वक्ता के रुप में डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक के सम्पादक को आमंत्रित किया गया था। डॉ. सुभाष जैन ने पूज्यपादश्री के जीवन चरित्र और पूज्यश्री के कार्यो का सुन्दर रुप से चित्रण किया और सभा को भावविभोर कर दिया। अन्य वक्ताओं ने भी पूज्यपादश्री के बारे में जानकारी दी। पूज्य आचार्य भगवंत ने भी सुन्दर वक्तव्य दिया। इस अवसर पर श्री संघ में दीपक के एकासणा का आयोजन किया गया। चार्तुमास सुन्दर रुप से प्रसार हो रहा है।

पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी मालदास स्ट्रीट उदयपुर में चार्तुमास करेंगे

✻ चार्तुमास प्रवेश उदयपुर में 6 जुलाई को हुआ।

✻ मुनि श्री अक्षतरत्नसागरजी म.सा. को गणि पदवी प्रदान होगी।

उदयपुर- आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. को 77 वीं वर्धमान तप ओली का पारणाराजगढ में होने के बाद आदि ठाणा। ओलीजी आराधक गणिवर्य आचार्यश्री आदि ठाणा का मालदास स्ट्रीट में भव्य चार्तुमास प्रवेश दिनांक 6 जुलाई को हुआ। डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक का सामायिक उद्बोधन भी हुआ डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक का सम्मान भी किया गया। डॉ. हरण ने आभार व्यक्त किया। पूज्य गणिवर्यश्री की निश्रा में श्री पद्मनाभ प्रभु आनेवाली चौवीसी के प्रथम तीर्थ का परमात्मा की भव्य प्रतियां से सुसज्जित चौगान मंदिर में दिनांक 18 जुलाई को अष्टापद की भाव यात्रा का आयोजन किया गया।। मालवा से बड़ी संख्या में गुरु भक्तों का उदयपुर आगमन हुआ। साध्वीश्री अर्पितगुणा म.सा. भी चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान है पूज्य मुनि पुंगश्री अक्षतरत्नसागरजी म.सा. को गणि पदवी के लिये सागर गच्छाधिपति की ओर से स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।गणि पदवी अनुकुलता से चार्तुमास के उपरांत होगी। पदवी कहां हो इस बारे श्रावक, श्री संघों के द्वारा अनेक सुझाव दिये गये है जिन पर गहराई से विचार चल रहा है।

अपूर्वमंगल गुरुकुल त्रिपुटीबंधु का चार्तुमास अंधेरी जैन श्री संघ मुंबई में होगा

मुबंई- राजस्थान के अजमेर जिले में शासन का प्रभावना डंका बजाने वाले पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठआचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व-अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म. सा.आदि साधु-साध्वीवृंद का भव्य चातुमार्सिक प्रवेश अंधेरी (वेस्ट) के श्री चंद्रप्रभु स्वामी जैन तपागच्छ श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ शांतावाड़ी में दिनांक 9 जुलाई को हुआ ,प्रवेश पर चारों ओर जैनत्व का नजारा दिखाई दे रहा था।मध्यप्रदेश, गुजरात में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों का आयोजन इस प्रसंग पर हुआ था। आपश्री की निश्रा में विभिन्न तप की श्रृंखला के साथ जाप और मंगल अनुष्ठान का शुभारंभ हो गया है। नवकार आराधना, आगमोद्धारक जयंति आदि कार्यक्रम का आयोजन होने जा रहा है। प्रवचन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों का आगमन हो रहा है। दिनांक 17 जुलाई से82 दिवसीय धर्मचक्र तप का भी शुभांरभ हुआ।

✻ ''सत्'' सत् ही है, सरल है, सुगम है, सर्वत्र उसकी प्राप्ति है परन्तु ''सत्'' को बतानेवाला ''सत्'' होना चाहिये।

उदयपुर में सिद्धि तपाराधना

उदयपुर- मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य श्री जितेन्द्रसूरीजी के जन्म शताब्दी वर्ष में उदयपुर में श्री महावीर स्वाध्याय समिति अम्बामाता में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान पूज्य आचार्य भगवंत श्री निपुणरत्नसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा मे सामुहिक सिद्धि तपाराधना का आयोजन हो रहा है। तप का शुभारंभ दिनांक 20 जुलाई को हुआ। तप की पूर्णाहुति 2 सितंबर को भव्य वरघोड़े पारणा के साथ होगी। सिद्धितप में 36 उपवास और 8 बियासणा होते है। एक उपवास बियासणा से लेकर 8 उपवास और बियासणा होता है।

छटी बार 180 उपवास

मुंबई- गोरेगांव श्रीनगर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. ने दिनांक 21 जुलाई को तपस्वीरत्न आचार्य भगवंत श्री हंसकीर्ति सूरीश्वरजी म.सा. को 16 उपवास के पच्चखाण दिये। पूज्य आचार्य श्री हंसकीर्तिसूरीजी म.सा. छटी बार 180 उपवास की आराधना कर रहे है। श्री संघ में पूज्यश्री की जोरदार अगवानी की।

✻ आचार्यश्री विजयविज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में 16 अगस्त को योग निष्ठप.पू.आ.श्री विजय केशरसूरीजी महाराजा की 91 वीं स्वर्गारोहण तिथि पर भव्य गुणानुवाद कार्यक्रम होगा।

श्री 108 पार्श्वनाथ भक्तिविहार श्री शंखेश्वर वचन सिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी की निश्रा में चातुमार्सिक आराधना

✻ चार्तुमास प्रवेश 9 जुलाई को श्री शंखेश्वर महातीर्थ में हुआ।
✻ उपधान तप आसोज सुदी-15 से आरम्भ होगा।

शंखेश्वर- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म. सा. आदि साधु-साध्वी ठाणा के चातुमार्सिक मंगल प्रवेश दिनांक 9 जुलाई को आचार्य पद गरिमा के अनुसार हुआ। प्रवेश पर गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के गुरुभक्तों की मंगल उपस्थिति रही। प्रवेश पर डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक का प्रासंगिक उद्बोधन भी हुआ। यहां पूज्यश्री के द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी श्री भगवती सूत्र पर प्रवचन दिये जा रहे है।

श्री 108 पार्श्वनाथ भक्तिविहार जैन धर्मशाला तहसील सभी जिला पाटण (गुज.)-384246 में दिनांक 12 जुलाई से 51 दिवसीय चार्तुमास आराधना आरंभ हुई। चार्तुमास का सम्पूर्ण लाभ मातुश्री सीताबहन लीलाधरभाई नेमजीभाई वडेरा (वाववाला) परिवार ने लिया है। चार्तुमास आराधना की पूर्णाहुति 2 सितंबर को होगी। पूज्यपादश्री की निश्रा में उपधान तप की आराधना भी आसोज सुदी-15 से आरंभ होगी। उपधान तप में साध्वीवर्या श्री दिव्य दर्शना श्रीजी का मार्गदर्शन रहेगा सम्पर्क -9879657466

अहमदाबाद में 40 आचार्य भगवंत एवं 1200 साधु-साध्वीजी चार्तुमास कर रहे है

अहमदाबाद- जैन धर्म के क्रिया सिद्धांतों अनुष्ठानों तप-जप और प्रवचनों महोत्सव से पजिज बनी अहमदाबाद कर्णावती नगरी के इस बार जोरदार भाग्य जागे है, यहां चार्तुमास आराधना के लिये लगभग सभी जैनश्री संघों में गुरु भगवंतों, साधु-साध्वी भगवंतों के चार्तुमास हो रहे है। 40 आचार्य भगवंत एवं 1200 साधु-साध्वी यहां विराजित है। चारों ओर धर्माराधना का मेला लगा है, श्रेष्टीवर्य श्रावक-श्राविका भी इस मौके को चुकना नहीं चाहते हैं वे भी दिल खोलकर अपनी लक्ष्मी का सद्व्यय विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान जप-तप और आराधकों के एकासणा, बियासणा आयंबिल आदि क्षेत्रों में कर रहे है। साधु-साध्वी भगवंतों की वैयावच्च में भी श्रावक-श्राविका दिल खोलकर सद्व्यय कर रहे है। अनेक धार्मिक अनुष्ठानों एवं प्रभावना में भी धर्मिष्ठ अपने धन का सद्व्यय कर रहे है। फरवरी महिना 2023 में भी एक विशाल सम्मेलन का आयोजन यहां होने जा रहा है उसमें भी बड़ी संख्या में गुरु भगवंतों का समावेश होगा और भविष्य की धार्मिक योजनाओं को अंतिम रुप दिया जायेगा।

ओसिया में जैन छात्रावास आरंभ

ओसिया- प्राचीन तीर्थ आसिया राजस्थान के जयपुर जिले में है, यहां विगत 107 वर्षो से जैन छात्रावास संचालित हो रहा है वर्तमान में कक्षा 4 से महाविद्यालय स्तर तक अध्ययन की व्यवस्था है। यहां अध्ययन करनेवाले जैन छात्र-छात्राओं के लिये रहने के साथ भोजन निःशुल्क व्यवस्था है। यहां अध्ययन करनेवाले कई विद्यार्थी उच्च पदों पर पहुंचे है। सम्पर्क-9680121705

बड़ावदा में चार्तुमास

बड़ावदा- सागर समुदाय की साध्वीवर्या शासन प्रभाविका श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा. एवं बड़वदा नगर की गौरव पू. अर्हप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का मंगलकारी चार्तुमास बड़ावदा में चल रहा है।आपका भव्य चार्तुमास प्रवेशोत्सव 6 जुलाई को जैन श्वेतांबर सकल श्री संघ, बड़ावदा तह. जावरा जिला रतलाम-457226 (म.प्र.) में हुआ।

श्री सरस्वती महापूजन

औरंगाबाद-यहां श्री विमलनाथ जैन श्वेतांबर जिन मंदिर परिसर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय की साध्वी-वर्या श्री कल्पज्योति श्रीजी, श्री शासन-ज्योतिश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 23 जुलाई को श्री सरस्वती महापूजन का आयोजन किया गया। अन्य आराधना-प्रवचन आदि निरंतर हो रहे है।

संघ स्थिवर सागर गच्छाधिपति के सम्मान में देश के 102 श्री संघों में गुरुपूर्णिमा पर गुरुभक्ति और गुरु गौरव उत्सव मनाया गया

मुंबई- पूज्यपाद गच्छाधिपति अभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा एवं शतकवीर सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करने वाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. श्री आचार्य श्री मोक्षरत्न सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में विलेपार्ले में पांच आचार्य भगवंतों की निश्रा में चार्तुमास में धर्मबिन्दु ग्रंथ पर प्रवचन हो रहे है। यहां बड़ी संख्या में धार्मिष्ठ 20 विहारमान तप की आराधना से जुड़ेहै।।तकवीर सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करने वाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा के गौरव में सम्पूर्ण जैन जगत के गुरु भगवंतों पूज्यश्री के प्रति असीम श्रद्धा और आदर का भाव प्रदर्शित किया है। दिनांक 13 जुलाई को देशभर मे 102 श्री संघों में पूज्यश्री की अभ्यर्थना में पूज्यश्री का गुणमान करते हुए अद्भूत गुरु भक्ति और गुरु गौरव को प्रदर्शित किया गया। गुरु भक्ति के सारे देश में विराजमान सागर के साथ विभिन्न समुदाय के जिनशासन के गौरव और मान को बढ़ानेवाले सैकड़ों की संख्या में गुरु भगवंतों सूरीमान मुनि भगवंत एवं साध्वीवर्याश्री ने अमृत निश्रा प्रदान की इसके साथ देशभर के श्रीसंघों में शक्रस्तव महाभिषेक का आयोजन भी हो रहा है। औरंगाबाद में साध्वीश्री स्नेह ज्योतिश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से गच्छाधिपति की अभ्यर्थना में 102 दिवसीय शांतिधारा शक्रस्तव का आयोजन 13 जुलाई से आरम्भ हुआ।

खाराकुंआ में आराधना मंदिर का उद्घाटन

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान साध्वीश्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. की निश्रा में दिनांक 17 जुलाई को प्रातःकाल शक्रस्तक अभिषेक का आयोजन किया गया। जाप के लिये तैयार किये गये आराधना जाप कक्ष का उद्घाटन श्री संघ की उपस्थिति में ओम पुण्याहम् ओम पुण्याहम् के उद्घोषक के साथ आगमोद्धारक डॉ.सुभाष जैन आदि परिवार के द्वारा किया गया इसके साथ ही चार माह तक प्रज्जवलित रहनेवाले अखाण्ड दीपक को भी प्रज्जवलित किया गया यहां साध्वीजी के द्वारा शांत सुधारक्ष ग्रंथ और जम्बुकुमार चारित्र का वाचन जा रहा है।

बड़ा उपाश्रय में नवकार पट्ट की स्थापना

उज्जैन- श्री हीरसूरीश्वरजी बड़ा उपाश्रय में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान साध्वीश्री हितदर्शना श्रीजी म.सा.और साध्वी श्री चारुदर्शना श्रीजी म.सा.की निश्रा में दिनांक 18 जुलाई को श्री नवकार महामंत्र के पट्ट की स्थापना विधि विधान के साथ की गई। शांति कलश भी स्थापित किया गया साथ ही श्रावक-श्राविका के जाप के लिये कटासना की स्थापना बोली लगाकर की गई। इस मंगल प्रसंग पर साध्वीजी म.सा. प्रवचन के साथ आगमोद्धारक डॉ. सुभाष जैन के द्वारा महामंत्र पर प्रासंगिक उद्बोधन किया गया। श्रावकों के 36 कर्त्तव्य और मालवा सुन्दरी चारित्र पर व्याख्यान प्रतिदिन हो रहे है।

भुज में 792 मासक्षमण

भुज- यहां चार्तुमास करने के लिये विराजमान कलापूर्णसूरीजी समुदाय के पूज्य आचार्य भगवंत श्री यशोविजय सूरीजी महाराज आदि ठााण-4 एवं साध्वीवर्या श्री कलावती श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 की अमृत निश्रा में यहां तपागच्छ श्री संघ में तप का जोरदार आगाज हुआ है, तपाराधना का बेजोड़ योग इस चार्तुमास में यहां बना है। पूज्यश्री अमृतनिश्रा में यहां 792 धर्मिष्ट आराधकों के द्वारा मासक्षमण तप की आराधना की जा रही है। आचार्य भगवंत ने 711 मासक्षमण तप का लक्ष्य रखकर आराधना आरंभ करवाइ्र है। तपागच्छ संघ के अंतर्गत यहां की गुर्जरवाड़ी में पूज्यश्री के नियमित प्रवचन चल रहे है। इस चार्तुमास के पूर्व भी पूज्यश्री की निश्रा में 235 सिद्धि तप की आराधना हो चुकी है।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९३ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड़ रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

दान अेज सफल जीवन

जैन श्वेतांबर सोसायटी में चार्तुमास

शिखरजी- मधुबन दिनांक 9 जुलाई को जैन श्वेतांबर सोसायटी मधुबन, शिखरजी के तत्वावधान में आयोजित चार्तुमास प्रवेश के अवसर पर विभिन्न धार्मिक पाठशालाओं के बच्चों व अन्य समाज के लोगों एवं तीर्थ यात्रियों का सैलाब उमड़ा। बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि श्री सम्मेत शिखरजी पार्श्वनाथ पर्वत की श्रृंखलाएं की तलहटी में हाजीर हजूर श्री भोमिया बाबा की पावन निश्रा में गुजरात से पधारे जैन संतों का प्रातः राजेन्द्र धाम से गाजते-बाजते सकल संघ नाचते हुए जैन समाज के लोग, संतों की शोभा यात्रा के रुप में जिन शासन के जयकारे लगते हुए लुंकड़प्रवेश द्वार पहुंचे। लुंकड़ द्वार पर जैन श्वेतांबर सोसायटी व्यवस्थापकों एवं महिलाओं ने चावल एवं श्रीफल की गोहली कर महाराजश्री का मंगल प्रवेश कराया। महिलाओं ने मंगल कलश लेकर अगवानी की वहां से महाराज श्री सांवलिया पार्श्वनाथ जिनालय और भोमिया बाबाजी के दर्शन कर ''श्री सुधर्मा सुशील प्रवचन पाठ'' पर विराज हुए। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महानंदसूरिश्वरजी ने कहा कि चार्तुमास में चार कषायों को त्याग करना है। इस अवसर पर पंन्यास श्री सिद्धचन्द्रविजयजी महाराज ने कहा कि चार्तुमास जीवन का परिवर्तन करने का पर्व है, चार्तुमास का सौभाग्य भाग्यशालियों को ही नसीब होता है। जीवन मिलने के बाद गुरु का सानिध्य मिलना बहुत ही कठिन होता है ऐसे में आपको इस चार्तुमास का पूरा लाभ लेना चाहिये।

जैन श्वेतांबर सोसायटी मधुबन शिखरजी के प्रबंधक श्री दीपक बेंगानी ने बताया कि 15 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर भगवान महावीर के सिद्धांतों उपदेशों को जन-जन तक पहुंचने वाले शासन सम्राट नेमीसूरीश्वरजी समुदाय के पंन्यास श्री सिद्धचन्द्रविजय महाराज 25 दिसंबर 2021 को गुजरात के अहमदाबाद से विहार करते हुए पांच राज्यों से 3200 कि.मी. का पैदल विहार करते हुए कई तीर्थों की स्पर्ना करते हुए शिखरजी पहुंचे।

सूरत में गुरुशक्ति अवतरण का आयोजन श्री सागर समाधि गुरु मंदिर में हुआ

सूरत- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा., श्री सागरचंदसागरसूरीजी म.सा., आचार्य श्री सौम्यचंद्रसागरजी, श्री विवेकचंद्रसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां आषाढ़ वद-1 गुरुवार के दिन पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीश्वरजी महाराजा के समाधि मंदिर, गुरु मंदिर गोपीपुरा में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री गुरुशक्ति अवतरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र जागरण अनुष्ठान, पांच अभिषेक के साथ पूज्यश्री की 12500 पुष्पों से मांत्रिक अनुष्ठान किया गया। पूज्यपादश्री के गुरुमंदिर के प्रति गुरु भक्तों की श्रद्धा भक्ति बढ़ रही है, गुरुवार के दिन बड़ी संख्या में भक्तों का आगमन हो रहा है। स्मरण रहे पूज्यश्री की इच्छानुसार यहां सूरत के जौहरी के द्वारा भव्य आगम मंदिर का निर्माण किया गया है। 15 दिवसीय ध्यानस्थ अवस्था में पूज्यश्री का देवलोक यहां हुआ था।

झाबुआ में गच्छाधिपति का चार्तुमास

झाबुआ-त्रिस्तुतिक समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में यहां चार्तुमास आराधना में धर्मिष्ठभाव उत्साह से जुड़े हुए है। दिनांक 4 अगस्त से पूज्यश्री की निश्रा में नवकार महामंत्र की आराधना आरंभ हुई। 13 अगस्त को आराधना की पूर्णाहुति होगी।

अम्बामाता उदयपुर में चार्तुमास

उदयपुर- महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति अम्बामाता में मेवाड़ देशोद्धारक श्री जितेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री निपुणरत्न सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 7 जुलाई को हुआ। आपकी निश्रा में चार्तुमास के अंतर्गत विभिन्न तपाराधना, जाप और अनुष्ठान के आयोजन होंगे। दिनांक 20 जुलाई से सिद्धितप का शुभारंभ हुआ एवं 36 लाख नवकार महामंत्र का जाप भी पूज्यश्री की निश्रा में आरंभ हुआ। पूज्यश्री की प्रेरणा से कभी भी पालीताना नहीं जानेवाले धार्मिष्ठों के लिये निःशुल्क पालीताना की यात्रा भी कराई जायेगी। आसोज आली का आयोजन भी होगा।

जैनाचार्यों की निश्रा में आगम मंदिर में साप्ताहिक धर्म आयोजन की श्रृंखला

✻उपधान तपाराधना का प्रथम मुर्हूत के साथ शुभारंभ 5 अक्टूबर को होगा। द्वितीय मुर्हूत 7 अक्टूबर का है। ✻चार्तुमास प्रवेश 10 जुलाई को आगम मंदिर सिद्धक्षेत्र में हुआ ✻ पालीताना में नव्वाणुं का आयोजन होगा।

पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 260 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, , मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणाके साथ साध्वीवृंदों की अमृत निश्रा में चार्तुमास सिद्धक्षेत्र गिरिराज की छत्रछाया पालीताना-आगम मंदिर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान - आदि ठाणा साधु-साध्वी की निश्रा में विभिन्न धर्म क्रिया, क्रिया रहस्य, फिर जहिर प्रवचन, आगम वाचना, भावयात्रा, नवकार सप्ताह और इतिहास सप्ताह के अंतर्गत जैन धर्म में संबंधी रोचक और उपयोगी जानकारी दी जा रही है। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठप्रवचन का लाभ ले रहे है। साथ ही आगामी कार्तिक पूनम से वहां भव्य नव्वाणुं यात्रा आरम्भ होगी। आपकी निश्रा में उपधान तपाराधना का प्रथम मुर्हूत के साथ शुभारंभ 5 अक्टूबर को होगा। द्वितीय मुर्हूत 7 अक्टूबर का है। सभी आराधकों को किट दी जायेगी। सम्पर्क- 7718545454

नाकोड़ा में गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा हुई

नाकोड़ा-श्री नाकोड़ा की पावन भूमि पर आचार्यदेव श्री लक्ष्मीसूरीजी के गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा महोत्सव 6 जुलाई को आयोजित किया गया। पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रविशेखर सूरीजी म.सा. एवं आचार्य देव श्रीमद् विजय ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री दिनांक 4 जुलाई को प्रवेश के साथ महोत्सव आरंभ हुआ। दो दिन संध्या भक्ति का आयोजन किया गया। दिनांक 7 जुलाई को द्वारोद्घाटन एवं सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

साध्वी मुक्तिदर्शनाश्री का चार्तुमास थोब की बाड़ी में

उदयपुर-पूज्य साध्वी श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री मुक्तिदर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास उदयपुर थोब की बाड़ी में चल रहा है। आपका प्रवेश 9 जुलाई को हुआ। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत आपके द्वारा धर्म बिन्दु ग्रंथ एवं भीमसेन चरित्रा पर व्याख्यान दिये जा रहे है। नौ दिवसीय नमस्कार महामंत्र की आराधना होगी। दिनांक 4 अगस्त को श्री मणिभद्रवीर की महापूजन तथा हवन का आयोजन किया गया।

श्री जैन श्वेतांबर सोसायटी वाराणसी का डाटा बैंक

वाराणसी- श्री जैन श्वेतांबर तीर्थ सोसायटी, भेलूपुरा वाराणसी प्रकट प्रभावी हाजरा हजुर पार्श्वनाथ दादा की जन्मभूमि पर कायमीदाता के हितों का ख्याल रखते हुए सर्वप्रथम ऑनलाइन डाटा बैंक का सॉफ्टवेयर बनवाया गया है जिसमें कायमीदाता का नाम एवं फोटो (वैकल्पिक) हर वर्ष उनकी दी गयी तारीख या तिथि पर स्वतः 16 कल्याणक भूमि भेलूपुरा तीर्थ, पार्श्वनाथ दादा, भोजनशाला, भदैनी तीर्थ (सुपार्श्वनाथ दादा), चंद्रावती (चंद्रा प्रभु दादा) पर लगी एलईडी पर प्रकाशित हो जाती है साथ ही कोई जैन संघ या श्रावक द्वारा अपने संघ का प्रचार किसी भी महात्मा का परिचय, आगमी प्रतिष्ठा, पर्व, वाणिज्यिक विज्ञापन (मर्यादापूर्वक) इत्यादि न्यूनतम दर मात्र 15000/- रुपये प्रति वर्ष की दर से करवा सकते है। दाता घर बैठे अपने मोबाईल या सिस्टम से प्रतिदिन के कायमीदाता का नाम एवं अन्य विशिष्ट देख सकते हैं। किसी भी कायमी का प्रचार का लाभ लेने के लिये सम्पर्क करें- 9115221166

अरविंदनगर उज्जैन में चार्तुमास

उज्जैन- श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्री संघ अरविंदनगर में मातृहृदया साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री अर्चनाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा-2 का चार्तुमास तप-जप-प्रवचन के साथ प्रसार हो रहा है। श्रृंखलाबद्ध आयंबिल, तपाराधना चल रही है। दिनांक 24 जुलाई को सभी के लिये संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

साबरमती जैन संघ में आचार्यश्री रश्मीरत्न सूरीश्वरजी का चार्तुमास प्रवेश भव्यता से हुआ

✼ अबकी बार मासक्षमण स्वीकार, साबरमती में तप का पुर आएगा - विजय रश्मिरत्नसूरी

साबरमती (रामनगर)- जैन श्वे, मू.पू.संघ के 3000 घरों के संघ में दीक्षा दानेश्वरी प.पू.आचार्य श्री गुणरत्न सूरिश्वरजी के शिष्य श्रमणीगणनायक प्रखर प्रवचनकार पूज्य आचार्य श्री रश्मीरत्न सूरीश्वरजी, आचार्य श्री संयमरत्नसूरीजी आदि ठाणा 51 और गुरु माता पूज्य प्रवर्तिनी श्री पुण्यरेखा श्रीजी आदि ठाणा 170 का मंगलमयी चार्तुमास प्रवेश अत्यन्त उल्लास से हुआ है। पूज्यश्री के स्वागत के लिये साबरमती का राजमार्ग मानव मेदनी से उमड पड़ा , स्वागत यात्रा पूर्ण होने के बाद प्रवचन हाल में घर्मसभा का भव्य आयोजन हुआ ।आचार्यश्री रश्मीरत्न सूरिजी ने अपने प्रवचन में फरमाया कि चार्तुमास वह भारतीय संस्कृति एवं जैन संस्कृति की धरोहर है। चार्तुमास आत्मा की वसंत ऋतु और आत्म जागृति का महान पर्व है। नव अलंकार से अपनी आत्मा को अलंकृत करने का यह पर्व है आज आत्म अस्पताल का भव्य का उद्घाटन हुआ है। सूक्ष्म और छोटे सभी छोटे-बड़े जीवों की रक्षा और अभयदान देने के लिए जैन समाज के चारों फिरकाओं के 16850 से अधिक पूज्य साधु-साध्वीजी म. अपनी विहार यात्रा को विराम देकर एक ही स्थान में चार महिने के लिए स्थिरता करके धर्म लाभ देते है। व्याख्यान, जप-तप और त्याग एवं ज्ञान संस्कार शिविरों का शानदार आयोजन होगा। छोटी-बड़ी तपस्या बहुत होगी। अबकी बार समूह मासक्षमण होंगे मंगल प्रसंग पर पू. आ. श्री रविरत्नसूरीजी और पू.आ.श्री अमितयशरत्नसूरीजी आदि ने प्रासंगिक उद्बोधन करके चार्तुमास की सफलता के लिये शुभकामना प्रगट की।

श्री शंखेश्वर में आगम मंदिर में चार्तुमास

गिरनार- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री अर्हमरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री शंखेश्वर महातीर्थ आगम मंदिर में हो रहा है प्रवेश 9 जुलाई को हुआ । तपस्वी मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी म . सा. को 97 ओली का पारणा अहमदाबाद में धर्म प्रभावना के साथ हुआ। आपने 98 वीं ओली श्री गिरनार तीर्थ में आरंभ की। अट्ठम् तपराधना मुनिश्री अर्हम्रत्नसागरजी म.सा. को चल रही है।

भोपाल में श्री मणिभद्र महापूजन

भोपाल- श्री आदिनाथ जैन श्री संघ तुलसीनगर भोपाल में पूज्य साध्वी श्री मुक्तिरेखा श्रीजी एवं श्री अस्मिता श्रीजी म.सा. की निश्रा में यहां तपागच्छ नायक अधिष्ठायक देवश्री मणिभद्र वीर की महापूजन तथा हवन का आयोजन दिनांक 17 जुलाई को भव्य रुप से किया गया। हवन महापूजन में बड़ी संख्या में धार्मिष्ठों ने लाभ लिया है।

उमरा और चाणस्मा में बंधु-बेलड़ी का चार्तुमास प्रवेश

सूरत-उमरा जैन श्री संघ में जैनाचार्य श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा के चार्तुमास प्रवेश पर पूज्य आचार्य भगवंत श्री अशोक सागरजी म.सा.आदि-6 आचार्य भगवंत की उपस्थिति रही। यहां सामूहक सिद्धाचल तप की आराधना आरम्भ हुई। चाणस्मा में पूज्य आचार्य भगवंत श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का प्रवेश जोरदार रहा। नेमुभाई की वाड़ी सूरत में पंन्यास प्रवर श्री प्रसन्नचंद्रसागरजी म.सा. का चार्तुमास हो रहा है। ऊंझा में गणिवर्य श्री तारकचंद्रसागरजी म.सा. प्रवेश प्रभावी रहा है। इन्दौर रेसकोर्स में गणिवर्य श्री सम्यगचंदसागरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 3 जुलाई को हुआ।

श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. का 2023 का चार्तुमास दक्षिण भारत में

प.पू. आचार्य श्री नेमि-लावण्य-दक्ष-सुशील गुरुकृप प्राप्त प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म. सा. एवं प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रविचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण -श्रमणी परिवार का सन् 2023 वर्ष का चार्तुमास दक्षिण भारत में करने की क्षेत्र स्पर्शना के अनुसार स्वीकृति प्रदान की है। सन् 2022 का चार्तुमास अनंत सिद्धों की पावन भूमि श्री सिद्धा चल पालीताना महातीर्थ में होगा एवं आसोज मास में विशाल संख्या में श्री उपधान तप की आराधना होगी। उपधान तप 6 अक्टूबर से होगा। माला 24 नवंबर को होगा।

हमारे तीज-त्यौहार

1- श्रावण सुदी-4	सोमवार	1/08/2022	मासधर मासक्षमण लेने का दिन
2- श्रावण सुदी-5	मंगलवार	2/08/2022	श्री नेमीनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक
3- श्रावण सुदी-6	बुधवार	3/08/2022	श्री नेमीनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक
4- श्रावण सुदी-8	शुक्रवार	5/08/2022	श्री पार्श्वप्रभु का निर्वाण कल्याणक
5- भादवा वदी-6	बुधवार	17/08/2022	पन्द्रह का दिन
6- भादवा वदी-12(द्वि)	बुधवार	24/08/2022	पर्वाधिराज महापर्व पर्युषण आरंभ- अट्ठाई का घर
7- भादवा सुदी-1	रविवार	28/08/2022	जन्मवाचन दिन 14 स्वप्न दर्शन
8- भादवा सुदी-2	सोमवार	29/08/2022	तेलाघर-गणघर वाद
9- भादवा सुदी-4	बुधवार	31/08/2022	संवत्सरी महापर्व बारसा सूत्र वाचन संवत्सरी प्रतिक्रमण क्षमापना

पंचक :

आरम्भः- भादवा वदी-15, शुक्रवार, दिनाक 12-8-2022 समय- 14.50 बजे

समाप्तः-भादवा सुदी-5, मंगलवार, दिनाक 18-8-2022 समय- 21.85 बजे

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः- भादवा वदी-12, (द्वि) बुधवार, दिनाक 24-8-2022 समय- 13.40 बजे से

समाप्तः- भादवा वदी-13, गुरुवार, दिनाक 25-8-2022 समय- 16.17 बजे तक

सब धर्मों में श्रेष्ट धर्म है , पर्युषण पर्व यह प्यारा ।
देखो कैसी धूम मची है, है बरसे अमृत धारा ।।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें ।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें ।

सादर आमंत्रण

❋ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

❋ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

❋ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❋ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें ।

- सम्पादक

सन् 2011 से अनवरत्...

श्री जैन श्वे. मालवा महासंघ एवं नवरत्न परिवार द्वारा

मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उडीसा, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार, छतीसगढ, आदि क्षेत्रों के 1500 से जिनालयो का

जिनालय शुद्धिकरण अभियान

जी हां!!! एक ही साथ - एक ही समय पर होगा
1500 से अधिक जिनालय का विराट दिव्य शुद्धिकरण

शुभ दिवस : भादवा वदी 3, रविवार 14 अगस्त 2022

दिव्य आशीर्वाद

भोपावर तीर्थोद्धार, जिनवाणी तीर्थ मार्गदर्शक, तप सम्राट, जप शिरोमणी, मालवभूषण, भक्तों के भगवान
परम पूज्य आचार्य देवेश **श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.**

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन

गुरु नवरत्न की पाटपरंपरा के संवाहक, सूरिमंत्र आराधक, महामांगलिक प्रदाता, इतिहास सर्जक, युवाहृदय सम्राट
परम पूज्य आचार्य देवेश **श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.**

ऐसे भवसुधारक, पुण्यार्जक, सुखप्रदायक प्रकल्प मे अपने श्रीसंघ के ट्रस्ट मण्डल, महिला मण्डल, स्वयंसेवी संगठन आदि समस्त श्रावक-श्राविकागण जुड़कर जिनशासन की शोभा मे अभिवृद्धि करें

आयोजक : श्री जैन श्वेताम्बर मालवा महासंघ एवं नवरत्न परिवार

वर्ष 27 | श्रावण-भादवा | अगस्त-2022 | अंक 8 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्टल रजिस्ट्रेशन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

बुक पोस्ट

प्रति,
श्रीमान् --

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897